ओ३म्
आर्य जगत्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 22 मार्च 2020 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 22 मार्च 2020 से 28 मार्च 2020

फाल्गुन कृ. – 13 ● वि० सं०–2076 ● वर्ष 62, अंक 12, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 196 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,120 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आचार्य देवव्रत, राज्यपाल गुजरात ऋषि बोधोत्सव पर टंकारा पहुँचे

ऋषि दयानन्द जन्मभूमि न्यास, टंकारा में आयोजित ऋषि बोधोत्सव पर गुजरात राज्य के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री जी को आमंत्रित किया गया था। आचार्य देवव्रत जी ने कहा जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से मिला तो उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं ऋषि दयानन्द जी जन्मभूमि टंकारा हो आया हूं? मैंने कहा कि हां, हो आया हूं। उन्होंने अपनी दूसरी चिन्ता कही। आप ऋषि दयानन्द के

प्रति अनन्य श्रद्धा रखते हैं। आप आर्यसमाज के दीवाने हैं। आपने ऋषि दयानन्द की महत्ता व गरिमा के अनुरूप उनकी जन्मभूमि नहीं बनाई? मैंने कहा कि इसका मुझे खेद है।

आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि यह स्थल हमारे लिये तीर्थ स्थल से कम नहीं है। आवश्यक सुविधायें होनी चाहियें जिससे ऋषिभक्त यहां आकर एक या दो दिन रुक कर गुरु दयानन्द का स्मरण कर सकें। ऋषि

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

डी ए वी, जयपुर में 'पूनम की पाठशाला'

वैशाली नगर स्थित **डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल** में महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती एवं ऋषि–बोधोत्सव के पावन अवसर पर दिनांक 20 फरवरी, 2020 को वैदिक शिक्षाओं पर आधारित '**पूनम की पाठशाला**' नामक कार्यशाला का आयोजन समारोह पूर्वक किया गया। इस कार्यशाला के मुख्य वक्ता एवं विषय विशेषज्ञ पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा व डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप–प्रज्ज्वलन व डी.ए.वी. गान के साथ किया गया।

मुख्य वक्ता आर्यशिरोमणि डॉ. पूनम सूरी जी ने उल्लेख किया कि वैयक्तिक जीवन के साथ सुखी समाज व उन्नत राष्ट्र के निर्माण में नैतिकता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। नैतिक मूल्यों के बिना सुख की कल्पना भी निराधार है। उन्होंने कहा कि नैतिकता का आधार स्तम्भ 'सत्य' है। अथर्ववेद के मन्त्र को उद्धृत करते हुए उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि **सत्य आहार, सत्य विचार, सत्य व्यवहार, सत्य आचार एवं सत्य आधार** का पंचसूत्री कार्यक्रम व्यक्ति व समाज को निश्चित रूप से नैतिक गति प्रदान करता है।

मुख्य अतिथि डॉ. सूरी जी ने उपस्थित शिक्षक–वृन्द का आह्वान करते हुए कहा कि यह कार्य केवल आप ही कर सकते हैं, क्योंकि वैचारिक परिवर्तन की क्षमता केवल गुरूजनों में ही निहित है। शिक्षकगण सम्पूर्ण मनोयोग से अपने छात्रों में सद्विचारों का आधान करें। वैचारिक क्रान्ति ही बदलाव का स्थिर आधार है। जन सामान्य में नैतिकमूल्यों की स्थापना ही डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं का एकमात्र उद्देश्य व दर्शन है।

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

डी.बी.एन. विद्यालय में दयानन्द जयन्ती सम्पन्न

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की जयन्ती व बोध दिवस के उपलक्ष्य में डी.बी.एन. विद्यालय में प्रातः यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें प्रधानाचार्य श्री नवनीत ठाकुर सहित समस्त स्टाफ व विद्यार्थियों ने वेद मंत्रोच्चार के साथ हवन में आहुतियां समर्पित कीं। प्रधानाचार्य ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा दिए गए उपदेशों सामाजिक बुराईयों, पाखण्डों, छुआछूत, बालविवाह का खंडन कर उनके सदुपदेशों का आत्मसात् करने के लिए प्रेरित किया।

विद्यार्थियों द्वारा महर्षि दयानन्दजी के जीवन वृतान्त पर आधारित एक नाटिका प्रस्तुत की गई जिसमें उनके जन्मोत्सव, शिवरात्रि पर्व की घटना, सत्य की खोज, सत्यार्थप्रकाश का प्रणयन, बुद्धत्व की प्राप्ति, 1875 में मुंबई आर्य समाज की स्थापना, वेदों का प्रचार प्रसार आदि कई महत्वपूर्ण प्रसंगों की अत्यंत रोमांचक व भव्य प्रस्तुति दी गई। इसके अतिरिक्त चारों सदनों के मध्य दयानन्दजी के जीवन से सम्बन्धित कविता पाठ, भाषण व स्लोगन प्रतियोगिताऐं आयोजित की गईं।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 22 मार्च 2020 से 28 मार्च 2020

हिरण्य-धारण

● **डॉ. रामनाथ वेदालंकार**

आयुष्यं वर्चस्यं रायस्पोषमौद्भिदम्।
इद् हिरण्यं वर्चस्वज्, जैत्रायाविशतादु माम्।।

यजु ३४.५०

ऋषिः **दक्षः**। देवता **हिरण्यं तेजः** छन्दः **भुरिग् उष्णिक्।**

● (**आयुष्यं**) आयु के लिए हितकर, (**वर्चस्यं**) ब्रह्मवर्चस को प्राप्त कराने वाला, (**रायस्पोषं**) ऐश्वर्य का पोषक (**औद्भिदं**) (शत्रुओं, विघ्न–बाधाओं एवं दुःखों को) उद्भिन्न कर देने वाला (**इदं**) यह (**वर्चस्वत्**) आत्म–कान्ति से युक्त (**हिरण्यं**) हिरण्मय तेज (**जैत्राय**) विजय के लिए (**मां**) मुझमें (**आविशतात् उ**) प्रविष्ट होवे।

● संसार के युद्ध–क्षेत्र में शत्रुओं, विघ्न–बाधाओं और दुःखों से संघर्ष करते हुए मुझे विजय प्राप्त करनी है। यदि मैंने विजय का उपाय न किया तो शत्रु मुझे निगल जायेंगे, बाधाएँ एक पग भी आगे न बढ़ने देंगी, दुःख निरन्तर कचोटते रहेंगे। इन सब पर विजय पाने के लिए आवश्यक है कि मैं 'हिरण्य' धारण करूँ। 'हिरण्य' सुवर्ण का नाम है। सुवर्ण तेजस्वी होता है, अतः ज्योति या तेज को भी 'हिरण्य' कहते हैं। मैं अपने शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा में 'ज्योति' को धारण करूँगा। शरीर को स्वस्थ, सबल, तेजस्वी बनाऊँगा। मन को शिव संकल्पवाला, अडिग, तेजोमय बनाऊँगा।

बुद्धि को त्वरित गति से सही निश्चय पर पहुँचनेवाली, शक्तिशालिनी, भास्वती बनाऊँगा। आत्मा को बलवान, विवेकशील, ज्योतिष्मान् एवं वर्चस्वी बनाऊँगा। अब तक मैं व्यर्थ ही सुवर्ण के आभूषण बनवाकर अंगुली, कलाई, कान आदि शरीर के किसी अंग में पहनकर यह मानता था कि मैंने 'हिरण्य' धारण कर लिया। पर आज मुझे ज्ञात हो गया है कि असली हिरण्य तो ज्योति या तेज है, जिसे अंग–अंग में धारण कर लने से मनुष्य अत्यन्त शक्तिशाली हो जाता है। शरीर के एक बहुमूल्य तत्त्व 'वीर्य' को भी शास्त्रकारों ने 'हिरण्य' कहा है। इस 'वीर्य' या 'रेतस्' को अनावश्यक रूप से प्रस्खलित न कर शरीर में धारण कर लेना एंव 'उर्ध्वरेताः' बन जाना ज्योति या तेज की प्राप्ति का एक सफल उपाय है। यह ज्योति, तेज और वीर्य रूप हिरण्य का धारण दीर्घ एवं उत्तम आयु को देनेवाला है, ब्रह्मवर्चस को प्राप्त करनेवाला है, भौतिक तथा आध्यात्मिक ऐश्वर्य की पुष्टि को देनेवाला है। यह 'औद्भिद' है, बीज का अंकुर जैसे भूमि की परत को फाड़कर ऊपर आ जाता है, वैसे ही यह सब प्रकार की भौतिक और मानसिक रुकावटों को, विविध दुःखों और पीड़ाओं को एवं बाह्य और आन्तरिक रिपुओं को उद्भिन्न करके उत्कर्ष की ओर ले जानेवाला है। यह 'हिरण्य' मेरे अन्दर प्रवेश करे, प्रचुरता और तीव्रता के साथ प्रवेश करे। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

प्रभु दर्शन

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में महात्मा आनन्द स्वामी ने बताया कि प्रभु–दर्शन की नींव सत्य, शिव और दृढ़ संकल्प से रख दी गई; परन्तु केवल नींव ही से तो कार्य सिद्ध होता है। अभी क्रियात्मक रूप से इस प्रकार का जीवन बनाना होगा, जो कि वास्तव में प्रभु–दर्शन करा सके। कई सज्जन कहते हैं कि 'बड़ी प्रबल इच्छा, अटल निश्चय और दृढ़ संकल्प से बैठते हैं कि मन को एकाग्र करके भगवान् के दर्शन पाएँगे; परन्तु कुछ भी पल्ले नहीं पड़ता। निराश होकर उठ खड़े होते हैं। दृढ़ संकल्प की नींव रखने के पश्चात् मनुष्य को अपना 'मनुष्य–जीवन' बनाना है। इसका अर्थ यह है? अर्थ यह है कि मनुष्य में मनुष्यत्व पैदा हो जाए। वह जड़वत् और पशुवत् न बना रहे। रोगी शरीर का स्वामी मनुष्यत्व से पतित हो जाता है, क्योंकि उसमें मनुष्य–धर्म को पूर्ण करने का सामर्थ्य नहीं। अपने शरीर तथा इन्द्रियों को इस प्रकार से रखो कि वे सदा स्वस्थ और बलवान् रहें। खान–पान ऐसा सात्त्विक हो, जिससे शरीर की शक्ति बढ़ती रहे और मनुष्य इस वैदिक आदर्श को दूसरों से सामने निस्संकोच भाव से रख सके। ***–अब आगे...***

चरित्र को पवित्र बनाओ!

शरीर को बलवान् एवं स्वस्थ बनाने के साथ यह भी आवश्यक है कि मनुष्य का चरित्र पवित्र हो। चरित्रहीन बलवान् तो पशुओं में भी बुरा हैं। वह तो समाज और परिवार का शत्रु है और मनुष्य कहलाने के भी योग्य नहीं।

यजुर्वेद 4।28 में भगवान् में यह प्रार्थना की गई है–

परि माग्ने दुश्चरिताद् बाधस्वा
मा सुचरिते भज।
उदायुषा स्वायुषोदस्थाममृताँऽअनु।।

"हे अग्ने! मुझे दुश्चरित से सदा बचाते रहो और सुचरित में सदा चलाते रहो, जिससे कि मैं उच्च जीवन और पवित्र जीवन के साथ देवताओं की और बढ़ूँ।"

आप यह निश्चय करें कि आप किसके साथी बनना चाहते हैं? देवताओं के या असुरों के? इस निश्चय के पश्चात् यदि देवताओं का साथी बनना पसन्द किया है, तो चरित्र पवित्र बनाना होगा। चरित्र का नाश करने वाली जो बाते हैं, वेद ने उनका निषेध किया है–

(क) सुरापान तथा बुद्धि–विनाशक अन्य मादक मादक द्रव्यों का सेवन न करें। ऋ. 7।86।62।।

(ख) मांस, अण्डा आदि अभक्ष्य पदार्थ न खाएँ। अथर्व. 8।6।23।।

(ग) द्यूत (जुआ) न खेलें। ऋ. 10।36।2।।

(घ) व्यभिचार न करें। ऋ. 4।5।5।।

(ङ) दूसरे का अधिकार, अन्न–धन न छीनें।

सबसे सद्व्यवहार करें और सबसे बढ़कर यह कि किसी से द्रोह न करें। पवित्र चरित्रवाला ही शीलवान् कहलाता है। शील के सम्बन्ध में कहा गया है–

अद्रोहः सर्वभूतेषु, कर्मणा मनसा गिरा।
अनुग्रहश्च ज्ञानं च, शीलमेतद् विदुर्बुधाः।।

"मन, वाणी और कर्म के द्वारा प्राणधारियों के विषय में द्रोह–रहित रहना और सबके भले में रहना तथा ज्ञान को बढ़ाते रहना, बुद्धिमान् लोग इसको (चरित्र, आधार) कहते हैं।" आचार–हीन के लिए तो कहीं ठिकाना ही नहीं है। क्योंकि–

आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः।

"जो आचार से हीन हैं, उसे वेद भी पवित्र नहीं करते।"

आचारः प्रथमो धर्मः।

"आचार पहला धर्म है।"

इसलिए पूरी सावधानी से अपने चरित्र की रक्षा करो। यह संसार फिसलनी घाटी है। यदि जीवन–यात्रा में कभी पाँव फिसल जाए, न चाहते हुए भी चरित्र में कमज़ोरी आने लगे, तो प्रभु के चरणों में झुककर उससे निवेदन करो–

ओ३म् यन्मे छिद्र चक्षुयो हृदयस्य
मनसो वातितृष्णं।
बृहस्पतिर्मे तद् दधातु। शन्नो
भवतु भुवनस्य यस्पतिः।।

यजु. 36।2।।

"जो मेरी आँखों में छिद्र (दोष) है, अथवा मेरे हृदय का तथा मन का जो गहरा गड्ढा है, हे बृहस्पति भगवान्! वह भर दो। हमारे लिए कल्याणकारी बनो! आप सबके स्वामी है।"

'महाभारत' में यह आदेश है–

वृत्तं यन्नेन संरक्षेद्, वित्तमेति च यानि च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो, वृत्ततस्तु हतो हतः।।

"वृत्त (चरित) की यत्न से रक्षा करे। वित्त (धन) तो आता है और जाता है। वित्त (धन) से क्षीण हुआ परन्तु वृत (चरित) से गिरा हुआ तो मरा ही हुआ है।"

आधुनिक काल में तो सब–कुछ वित्त (धन) ही समझ लिया गया है। बाल्यकाल में पाठशाला में हम पढ़ा करते थे।

शेष पृष्ठ 03 पर ☞

वैदिक त्रैतवाद

● पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

वैदिक त्रैतवाद का अर्थ यह है कि वेदों के सिद्धान्तानुसार तीन पदार्थ अनादि और अनन्त हैं – 1. ब्रह्म 2. जीव 3. प्रकृति। ब्रह्म जिसके ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा आदि अनेक नाम हैं। यह एक विभु या सर्वदेशी, ज्ञान–वती तथा शक्तिमती सत्ता है जो एक है, अखण्ड और एकरस है। इसमें किसी काल या किसी अवस्था में भी किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता। जीवन परिच्छिन्न अर्थात् एकदेशी और चेतन सत्ता है। इसको कर्तृत्व – भोकृत्व – ज्ञातृत्व – वानाणु कह सकते हैं। जीवन अनेक अर्थात् संख्या की अपेक्षा अनन्त है। इसमें भिन्न–भिन्न कालों में परिस्थिति के अनुसार ज्ञान की अपेक्षा से परिवर्तन होता रहता है, अर्थात् जीव का ज्ञान घटता–बढ़ता रहता है और उसी के अनुसार उसकी भोकृत्व और कर्तृत्व शक्ति भी प्रभावित होती रहती है। प्रकृति परमाणुओं, देश, काल आदि की मौलिक अवस्था का नाम है। इन्हीं के संयोग–वियोग आदि द्वारा सृष्टि बनती बिगड़ती रहती है। प्रकृति जड़ है। उसमें न कर्तृत्व है, न भोकृत्व और न ज्ञातृत्व। यह स्वयं न कुछ कर सकती है, न सुख–दुःख का अनुभव कर सकती है और उन इसमें ज्ञान है। यह हुआ वैदिक त्रैतवाद का साधारण विवरण।

आर्यसमाज अर्थात् वेदों के सिद्धात की यह एक विशेषता है जो अन्य धर्मों के सिद्धान्तों से भिन्न है। पहले यह बता देना चाहिए कि यह भिन्नता कहाँ है।

वैसे तो सभी जीव, ब्रह्म और जड़ जगत् को मानते हैं। सृष्टि की वर्तमान अवस्था में यह भेद इतना प्रत्यक्ष और स्पष्ट हो जाता है कि कोई इसका विरोध नहीं कर सकता। आप किसी धर्मावलम्बी को उपासना करते देखिए। वह अपनी सत्ता को मानता है, अपने उपास्य देव की सत्ता को मानता है और इन दोनों से इतर उन वस्तुओं की सत्ता को भी मानता है। जिनकी प्राप्ति के लिए अथवा जिनसे बचने के लिए वह अपने उपास्य देव से प्रार्थना कर रहा है। इस प्रकार तीन सत्ताएँ हो गईं। एक उपासक अर्थात् जीव, दूसरा उपास्य अर्थात् ब्रह्म, तीसरी अन्य वस्तुएँ जिनको वह लेना या छोड़ना चाहता है। यहाँ तक किसी का कुछ भेद नहीं है। परंतु भेद चलता है इन तीनों के सम्बन्ध में अर्थात् अल्पज्ञ जीव, सर्वज्ञ ब्रह्म और अज्ञ अर्थात् सर्वथा ज्ञान–शून्य जड़ जगत् में क्या सम्बन्ध है? क्या ये तीनों वस्तुएँ अनादितः और अनन्ततः भिन्न हैं या किसी समय या किसी अवस्था में वे एक थीं और किसी कारण से उनमें भेद पड़ता गया? इस विषय में भिन्न–भिन्न धर्मों में तीन प्रकार के सिद्धांत पाए जाते हैं–

1. विवर्तवाद 2. गुण–परिणामवाद 3. आरम्भकवाद।

विवर्तवाद या भ्रमवाद–इनकी मोटी–मोटी व्याख्या पर विचार कीजिए। अर्थात् जो वस्तु न हो और प्रतीत होती हो उसको विवर्त कहते हैं। रज्जु में सर्प, सीप में चाँदी और रेत में जल इसके उदाहरणस्वरूप हैं, अर्थात् जब कोई अँधेरे में पड़ी हुई रस्सी को साँप समझ लेता है तो वस्तुतः वहाँ साँप प्रतीत होता है और उजाले में देखने से फिर साँप की प्रतीति न रहेगी–यही विवर्त है। सीप चाँदी नहीं है, परंतु सीप में चाँदी की प्रतीति होती है अर्थात् सीप को देखकर लोगों को भ्रम हो जाता है कि चाँदी है। इसी प्रकार रेतीले मैदानों में पथिकों को दूर से रेत, जल प्रतीत होने लगता है। वे जल की खोज में जब निकट पहुँचते हैं तो उनको पता लगता है कि यह सब भ्रम था। ये तीनों हुए विवर्त के दृष्टांत। कुछ लोगों का कहना है कि जैसे रस्सी को भ्रम के कारण साँप समझ लेते हैं या रेत को जल या सीप को चाँदी, इसी प्रकार न तो जीव कोई अलग सत्ता है, न सूर्य, चन्द्र, नदी, पहाड़, वृक्ष आदि। केवल ब्रह्म है, अन्य वस्तुओं की प्रतीति भ्रम के कारण हो रही है।

गुण–परिणामवाद–अर्थात् किसी वस्तु का बदलकर अवस्थान्तर को ग्रहण कर लेना। जैसे जल बर्फ बन जाए, या बर्फ पिघलकर जल बन जाए। जल बर्फ नहीं है, न बर्फ जल है, परंतु जल ही बदलकर बर्फ रूप हो गया है या बर्फ ही बदलकर जल रूप हो गई है। दूसरा दृष्टांत है घी के जमने और पिघलने का। जमा हुआ घी और वस्तु है और पिघला हुआ घी और वस्तु। परंतु तत्त्व में दोनों एक हैं। एक ही वस्तु बदलकर दूसरी बन गई है। इसको गुण–परिणाम कहते हैं, अर्थात् मूल तत्त्व है तो एक, परंतु उसमें परिणाम अर्थात् तब्दीली होती रहती है। इसी प्रकार कुछ लोगों का कहना है कि मूल तत्त्व तो है केवल एक ब्रह्म। परंतु वही ब्रह्म सृष्टि का निमित्त–उपादान–कारण है। जीव तथा संसार की सब वस्तुएँ उत्पन्न होती और विनष्ट हो जाती हैं। ये न अनादि हैं न अनन्त। ये ब्रह्म से ही उत्पन्न होती और ब्रह्म में ही विलीन हो जाती हैं।

तीसरा सिद्धान्त है आरम्भकवाद का – अर्थात् जैसे अलग–अलग ईंटों की सत्ता है। जब ईंटों को जोड़ दिया गया तो मकान बन गया। इस प्रकार आरंभकवादी कहते हैं कि परमाणु असंख्य और अनादि हैं। इनके संयोग से सृष्टि बनती है और वियोग से नष्ट हो जाती है। सृष्टि में हर समय संयोग और वियोग हुआ करता है। वस्तुतः संयोग का नाम ही सृष्टि है और वियोग का प्रलय। आटे से रोटी, मिट्टी के कणों से ईंट–ये सब आरंभकवाद के दृष्टान्त हैं। इन तीनों सिद्धान्तों के लिए सृष्टि में दृष्टांत मिल जाते हैं।

यह विशेषता – आर्यसमाज इन तीनों सिद्धान्तों को ठीक मानता है। परंतु भेद इतना है कि आर्य समाज की दृष्टि में ये तीनों सिद्धान्त एकांगी हैं, सर्वतन्त्र नहीं अर्थात् विवर्त, परिणाम तथा आरम्भक तीनों हमको नित्यप्रति मिलते हैं। भूल यह है कि लोग एक वाद को सभी वस्तुओं पर लागू करना चाहते हैं।

इसको कुछ और स्पष्ट कर दिया जाए। कभी–कभी ऐसा होता है कि मुझे रस्सी का साँप प्रतीत होता है या साँप की रस्सी प्रतीत होती है। इतने अंश में तो विवर्त ठीक ही है, परंतु यह कहना ठीक नहीं कि मैं सदा साँप को रस्सी या रस्सी को साँप समझता हूँ। यदि सदा रस्सी को साँप समझा जाता है सदा साँप को रस्सी। उस समय विवर्त की व्याख्या भी न हो सकती। इसी प्रकार सोने का अँगूठी में परिवर्तित हो जाना परिणाम अवश्य है। परंतु जब कोई रेत को दूर से जल समझ बैठे या जल का रेत तो रेत और जल में परिणाम और परिणामी का सम्बन्ध नहीं है। इसी प्रकार दस कड़ियों से मिलकर एक जंजीर बन जाना या एक हज़ार ईंटों से मिलकर एक दीवार बन जाना–यह तो आरंभक है, परंतु ऑक्सीजन और हाइड्रोजन मिलकर जब जल बनता है तो इसको आरंभक नहीं कहते। क्योंकि ईंटों का मिलकर दीवार बन जाना एक भिन्न प्रकार का संयोग है और ऑक्सीजन और हाइड्रोजन का मिलकर जल बना जाना एक भिन्न प्रकार का। पहले को साधारण योग और दूसरे को रासायनिक संयोग कहते हैं। पचास ईंट मिलकर भी ईंट ही रहती है, परंतु जल की अवस्था ऑक्सीजन और हाइड्रोजन दोनों की अवस्था से भिन्न है। इसलिए यह कहना बड़ी भारी भूल है कि केवल विवर्तवाद से ही या केवल परिणामवाद से ही या केवल आरम्भकवाद से ही हम सृष्टि–सम्बन्धी समस्त गुत्थियों को सुलझा देंगे। इसी भूल के कारण भिन्न–भिन्न वादों में झगड़ा है।

विवर्तवादी कहता है कि मुख्य और मौलिक सत्ता एक ब्रह्म है। ब्रह्म से इतर कोई और वस्तु न थी, न है, न होगी। रहा जीवभाव या जड़भाव, यह विवर्त है अर्थात् है नहीं, केवल प्रतीत होता है। आर्यसमाज कहता है कि यह ठीक नहीं, क्योंकि यदि ब्रह्म से इतर कोई सत्ता नहीं है तो विवर्त केवल ब्रह्म को ही हो सकता है अर्थात् ब्रह्म ही भूल से अपने को कुछ और समझ सकता है। इसमें दोष हैं। प्रथम तो मौलिक दोष है अर्थात् जब तक ब्रह्म से इतर कोई वस्तु है ही नहीं तो भूल से ही ब्रह्म अपने को इतर नहीं समझ सकेगा। यदि साँप न होता तो कोई भूल से भी रस्सी को साँप न समझता। यदि चाँदी अलग कोई वस्तु न होती तो कोई सीप में चाँदी न समझता। दूसरा दोष यह है कि यदि ब्रह्म भी भूल का अपराधी हो सकता है तो कोई दोषरहित ज्ञानमयी सत्ता रह नहीं जाती जिसकी अपेक्षा से एक को ज्ञान और दूसरे को भ्रम कह सकें। भ्रम भी ज्ञान की अपेक्षा रखता है। उपनिषदों में ब्रह्म को 'सत्य ज्ञान, अनन्त' कहा है अर्थात् ब्रह्म सत्य है, ज्ञान है और अन्नत है। इसके अर्थों पर विचार कीजिए। सत्य का क्या अर्थ? वहीं जो कि कभी बदले न। तीनों काल में एक सा रहे। जो ब्रह्म अपने को भ्रम या भूल से जीव समझ ले वह सत्य कैसा? उसको ज्ञान भी नहीं कह सकते, क्योंकि यदि मैं अपने को घोड़ा या वृक्ष समझ लूँ तो लोग मुझको मूर्ख कहेंगे। इसी प्रकार जो ब्रह्म भ्रम में पड़कर अपने को जीवन समझता, विवाह करता, गृहस्थ के बंधन को स्वीकार करता, सुख–दुःख भोगता और कभी–कभी अनेक प्रकार के पाप करता या अपने को पापी और महापापी समझता है, उसको ज्ञान या ज्ञानी बताना कैसे हो सकता है? इसलिए स्पष्ट है कि जिस ब्रह्म को उपनिषद् ने 'सत्य' और 'ज्ञान' बताया है वह एक अखण्ड और सर्वज्ञ सत्ता है जिसको कभी भ्रम नहीं हो सकता।

क्रमशः

गंगा ज्ञान सागर से साभार

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

प्रभु दर्शन

धन का नाश हो जाये तो कुछ नहीं बिगड़ा।
स्वास्थ्य बिगड़ जाए तो थोड़ी हानि हुई।
चरित्र बिगड़ जाये तो सर्वनाश हो गया।।

लेकिन अब इससे बिल्कुल उल्टी बात हो गई है। नीचे की चीज़ें ऊपर चली गई हैं। ऊपर की चीज़ें नीचे आ गई है। वचन से भले ही लोग कहते हों, परन्तु कर्म से अब यह कहा जाने लगा है–

चरित्र बिगड़ जाये तो कुछ नहीं बिगड़ा।
स्वास्थ्य बिगड़ जाए तो थोड़ी हानि हुई।
धन का नाश हो जाये सर्वनाश हो गया।।

अर्थात् वृत्त (चरित्र) का स्थान वित्त (धन) ने ले लिया है। चक्की उलटी चलने लगी है।

आधुनिक सभ्यता के प्रेमी बड़े गर्व से कहते हैं कि हम जनता का 'स्टैंडर्ड ऑफ लाइफ' (जीवन–स्तर) ऊँचा करना चाहते हैं। परन्तु इनका 'जीवन–स्तर' केवल भौतिक शरीर तक ही सीमित है। इससे आगे नहीं जाता। सुंदर वस्त्र पहनना, योग के आसनों तथा व्यायाम के स्थान पर बेडमिंटन इत्यादि खेलना, भोजनशाला में बैठकर भोजन करने के बजाय डाइनिंग–हाल में मेज़ लगाकर भोजन

शेष पृष्ठ 05 पर ☞

क्रान्तिकारी शिरोमणि और क्रान्ति–लेखक शहीद भगतसिंह

● आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक

सरदार भगतसिंह उन क्रान्तिकारियों में से एक हैं जिनका नाम और काम व्यापक स्तर पर प्रसिद्ध हुआ। इसके कारण थे–सरदार भगतसिंह की क्रान्तिकारी पारिवारिक पृष्ठभूमि का होना, क्रान्तिकारी लेखक होना और उत्साही क्रान्तिकारी होना।

भगतसिंह ने जब से होश संभाला, उन्हें अपने परिवार में आर्यसमाजी संस्कार, देशभक्ति और क्रान्तिकारी–वातावरण मिला। भगतसिंह का जन्म जिला–लायलपुर के 'बंगा' नामक गांव में हुआ था। उनके दादा जी का नाम सरदार अर्जुनसिंह था। सरदार अर्जुनसिंह सिख परिवार के होते हुए भी संस्कारों से दृढ़ आर्यसमाजी थे। वे जहाँ भी जाते, अपने साथ एक पोटली रखते थे जिसमें यज्ञकुण्ड और यज्ञ सम्बन्धी सामान रहता था। वे प्रतिदिन यज्ञ करते थे। वे पूरी निष्ठा और गम्भीरता से महर्षि दयानन्द रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' का स्वाध्याय किया करते थे। सत्यार्थ प्रकाश के प्रति उनकी अपार श्रद्धा थी। उस ग्रन्थ से उन्होंने स्वराज्य प्रेम की प्रेरणा ली थी। यही स्वराज्य भावना उनके तीनों पुत्रों श्री किशनसिंह, श्री अजीत सिंह और श्री स्वर्णसिंह में कूट–कूट कर भरी गई थी। स्वराज्य के लिए तीनों पुत्रों ने कारावास भोगा, जेल की यातनाएँ सही। स्वर्णसिंह तो जेल की यातनाओं से जर्जर शरीर के कारण युवावस्था में ही वीरगति को प्राप्त हो गये थे। भगतसिंह के पिता श्री किशन सिंह और चाचा अजीत सिंह को मांडले (बर्मा) की जेल में बंद किया हुआ था। ये जब छूटकर आये उसी दिन भगतसिंह का जन्म हुआ था।

भगतसिंह के दादा अर्जुनसिंह एक बार अपने गांव से 60 मील दूर किसी विवाह में शामिल होने के लिए गये। विवाह के अवसर पर सिख पुरोहित महर्षि दयानन्द रचित सत्यार्थप्रकाश के उदाहरण दे–दे कर उसकी कटु आलोचना कर रहा था। अर्जुनसिंह ने देखा कि वह व्यक्ति झूठे उदाहरण सुना–सुना कर लोगों को भड़का रहा था। अर्जुन सिंह ने उसको टोकते हुए कहा कि 'आप लोगों को मिथ्या और कल्पित उद्धरण सत्यार्थप्रकाश के नाम पर सुना रहे हैं, ये बातें सत्यार्थप्रकाश में नहीं हैं। आप सत्यार्थप्रकाश को व्यर्थ बदनाम न करें, उसने कहा कि 'सत्यार्थप्रकाश लाओ, मैं सारे उद्धरण दिखा दूँगा।' उस समय कहीं–कहीं कोई–कोई पुस्तक मिलती थी। पुरोहित ने सोचा था कि तेरी ऊपर रह जायेगी। यहाँ किसके पास सत्यार्थप्रकाश मिलेगा?

सत्यार्थप्रकाश के प्रति श्रद्धा रखने वाले श्री अर्जुनसिंह रात में ही 60 मील पैदल चलकर घर आये और सत्यार्थप्रकाश लेकर सबेरे तक पैदल ही वापस विवाहस्थल पर पहुँच गये। जब पुरोहित को सत्यार्थप्रकाश हाथ में थमा कर उद्धरण दिखाने के लिए कहा तो वह बगलें झांकने लगा। आखिर पुरोहित ने अपनी गलती के लिए माफी मांगकर पीछा छुड़ाया। इसी प्रकार भगतसिंह की दादी भी एक धार्मिक महिला थी। यही संस्कार एवं परम्पराएँ भगतसिंह तक आयीं। तीन वर्ष की अवस्था में आपने गायत्री मन्त्र स्मरण कर लिया था। भगतसिंह का यज्ञोपवीत संस्कार आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी पं. लोकनाथ जी वाचस्पति ने कराया था। शिक्षा प्राप्त करने के लिए आपके पिता जी ने आपको डी.ए. वी. स्कूल लाहौर में प्रवेश दिलाया। अन्तिम वर्षों में आपकी विचारधारा क्रान्तिकारी के साथ–साथ साम्यवादी हो गई थी। देशहित और समाजहित के लिए आपने अपना जीवन लगा दिया। शेष जीवन–परिचय क्रान्तिकारी श्री मन्मथनाथ गुप्त के शब्दों में प्रस्तुत है। (सम्पादक)

सरदार भगतसिंह के विषय में लिखते हुए जो सब से पहली बात सामने आती है, वह यह कि उनके खानदान में देशभक्ति कोई अपरिचित वस्तु नहीं थी। उनके पिता सरदार किशनसिंह बड़े धीर, स्थिर और ज्ञानी व्यक्ति थे, फिर भी उन्हें पुलिस से बचने के लिए नेपाल जाना पड़ा था। उनके चाचा सरदार अजीतसिंह को क्रान्तिकारी आन्दोलन के सिलसिले में बहुत दिनों तक नजरबन्द किया जा चुका था। इसी प्रकार उनके एक अन्य चाचा सुवर्णसिंह भी किसी न किसी प्रकार से क्रान्तिकारी आन्दोलन से सम्बद्ध थे। जिस दिन सरदार भगतसिंह पैदा हुए, उसी दिन उनके चाचा अजीतसिंह और सुवर्णसिंह जेल से छूटे। इसी से खुश होकर उनकी दादी ने उनको भागों वाला या भाग्यवान् कहा और उनका नाम भगतसिंह पड़ा।

सरदार भगतसिंह ने डी.ए.वी. स्कूल से मैट्रीकुलेशन पास किया। उसके बाद वे नेशनल कॉलेज में पढ़ने लगे, जहाँ उनका परिचय सुखदेव, भगवतीचरण, यशपाल आदि से हुआ जो बाद में चलकर बहुत प्रमुख क्रान्तिकारी हुए। इस कॉलेज में जयचन्द्र विद्यालंकार नाम के एक अध्यापक थे जो बहुत पहले शचीन्द्रनाथ सान्याल के प्रभाव में आ चुके थे। जयचन्द्र जी ने शचीन्द्रनाथ सान्याल के **'बन्दी जीवन'** के दूसरे भाग का अनुवाद भी किया था, जो बहुत कम लोगों को मालूम है। जयचन्द्र हिन्दू विचारों के थे, पर क्रान्ति का प्रचार करते थे। कुछ भी हो, इन्हीं के जरिए से भगतसिंह और उनकी मित्र मण्डली का प्रवेश क्रान्तिकारी दल में हो गया। गुरु गुड़ ही रह गए और चेले चीनी हो गए। जयचन्द्र का एक प्रभाव फिर भी इन लोगों पर यह रह गया कि सबके सब विद्याप्रेमी हुए। यद्यपि भगतसिंह सिख परिवार में पैदा हुए थे, पर उन्होंने हिन्दी भी सीख ली और हिन्दी में लिखने लगे।

जब भगतसिंह ने एफ.ए. पास कर लिया, तब घर वाले जो दूध के जले थे और फूंक फूंककर छाछ पीते थे, वह चाहने लगे कि भगतसिंह की शादी हो जाए। भगतसिंह ने समझा कि यह यों ही बात है, जैसे हुआ करती है टल जाएगी। इसलिए उन्होंने टालना शुरू किया, पर जब देखा कि बात टलने वाली नहीं है और घर वाले शादी करने पर उतारू हैं तो उन्होंने समझा कि शादी करके एक नवयुवती का जीवन नष्ट करने के बजाय घर से भाग चलना ही अच्छा है। तदनुसार वे वहाँ से भागे और भाग कर दिल्ली पहुँचे और 'अर्जुन' पत्र में काम करने लगे।

इसके बाद वे कानपुर गए, क्योंकि दिल्ली का पता घरवालों को मालूम हो चुका था। कानपुर में उन्होंने गणेशशंकर विद्यार्थी द्वारा प्रवर्तित और सम्पादित 'प्रताप' में कुछ काम करना शुरू किया और वहाँ वे अपना परिचय बलवन्तसिंह देने लगे। यही उनके दल का नाम भी बन गया।

जो कुछ भी हो, जब सरदार भगतसिंह कानपुर में थे, तब फिर एक बार घर वालों को पता लग गया कि वे कानपुर में हैं। यह खबर एक मित्र के जरिए से लगी थी। तब मित्र को सन्देश आया कि भगतसिंह की माँ बहुत बीमार है और उसे कहो कि वह जल्दी घर चला आए। भगतसिंह को अपनी माँ से बहुत प्यार था। वे फौरन घर चले गए। वहाँ फिर उन से शादी की बात नहीं कही गई। वहाँ उन दिनों सारे पंजाब में **गुरु का बाग** वाला अन्दोलन चल रहा था, जिसका उद्देश्य बहुत ही उचित था। वह यह था कि सिख महन्तों ने जो बड़ी–बड़ी जायदादों पर कब्जा कर रखा है, वे उनसे ले ली जाएँ और सिख समाज को सौंपी जाएँ। कहना न होगा कि यह आन्दोलन भगतसिंह को बहुत पसन्द आया और उन्होंने उन लोगों की बड़ी सेवा की जो उनके गांव बंगा से होकर सत्याग्रह करने के लिए जत्थे ले जा रहे थे। ये जत्थे शहीदी जत्थे कहलाते थे। भगतसिंह ने इस आन्दोलन में भाग लेने वालों को पूरी मदद दी, पर वे स्वयं किसी जत्थे में शरीक नहीं हुए, क्योंकि वे जिस शहीदी जत्थे में शरीक हुए थे, उस जत्थे के पांव में बाकी सब जत्थे के पांव आ जाते थे। क्रान्तिकारी आन्दोलन का उद्देश्य सब तरह से महन्तों और महन्ती का अन्त करके जनता के हाथ में राष्ट्र और सारे उत्पादन के साधन सौंपना था। अफसोस है कि भारत स्वतन्त्र हुए इतने दिन हो गए, पर हिन्दू–मुस्लिम–सिख–ईसाई महन्तों का खात्मा नहीं हुआ और वे धर्म के नाम पर साधारण जनता को उल्लू बनाकर खूब गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। धर्म निरपेक्ष राष्ट्र का यह अर्थ नहीं।

इन्हीं दिनों की बात है कि बंगाल में गोपीमोहन शाहा एक अंग्रेज़ को मारकर शहीद हो गये। गांधी जी ने इस पर गोपीमोहन शाहा की बड़ी निन्दा की, पर बंगाल के नेता देशबन्धु चित्तरंजन दास ने न केवल गोपीमोहन की प्रंशसा की, बल्कि सिराजगंज प्रान्तीय सम्मेलन में गोपीमोहन की प्रशंसा के लिए एक प्रस्ताव पास कराया। गांधी और दास में इस बार सार्वजनिक रूप में बहुत लम्बा तर्क–वितर्क हुआ। सरदार भगतसिंह के कानों तक भी इनकी खबर पहुंची। उन्होंने लायलपुर में इस सम्बन्ध में एक भाषण किया। जिसमें क्रांतिकारी पक्ष का जोरदार समर्थन और कहा कि प्रत्येक गुलाम जाति को अधिकार है कि वह जिस भी प्रकार चाहे और जिस भी प्रकार सम्भव हो अपनी गुलामी की जंजीर को तोड़ डाले। इस पर पुलिस ने भगतसिंह पर राजद्रोह का मुकदमा चलाना चाहा, पर मुकदमा चल नहीं सका और भगतसिंह के नेतृत्व में और भी नवजवान आ गए।

काकोरी षड्यन्त्र के जमाने में ही भगतसिंह पंजाब में क्रान्तिकारी नेता के रूप में मान लिये गए थे और काकोरी षड्यन्त्र में पेश किए गए गुप्त कागजात में लाहौर के उपदेशक नाम से जिस व्यक्ति का उल्लेख आया करता था, वे भगतसिंह ही थे। यद्यपि पुलिस को उस समय इनका पता नहीं था। भगतसिंह एक बार काकोरी षड्यन्त्र के मुकदमें का तमाशा देखने लखनऊ भी आए थे। उस समय मुकदमा सैयद ऐनुद्दीन की निम्न अदालत में चल रहा है।

जब तक काकोरी षड्यन्त्र चलता रहा तब तक क्रान्तिकारी दल के अन्दर का नरम पक्ष साथ ही गिरफ्तार लोगों के रिश्तेदार बाहर के क्रान्तिकारियों और फरारों पर यह प्रभाव डालते रहे कि कोई ऐसा कार्य न किया जाए जिससे मुकदमे पर बुरा प्रभाव पड़े और सरकार बदला लेने के लिए तैयार हो जाए। भीतर–भीतर पुलिस के साथ एक समझौते की बातचीत चल रही थी, जिसका उद्देश्य यह था कि कुछ अभियुक्त एकदम छोड़ दिए जाएं किसी को फांसी न हो इत्यादि इत्यादि। पर पुलिस ने अन्त तक समझौता करना स्वीकार नहीं किया, क्योंकि उसे काफी प्रमाण मिल गए और रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, अशफाकउल्ला और रोशनसिंह को फांसी की सजा दे दी गई। तब चन्द्रशेखर आज़ाद, भगतसिंह और काकोरी षड्यन्त्र के दण्डित राजकुमारसिंह के छोटे भाई विजयकुमार सिंह खुलकर आन्दोलन में तेज़ी लाने के लिए तैयार हो गए। जब अपने साथियों को फांसी हो ही गई, तो फिर समझौता या रियायत का प्रश्न कहाँ उठता था। सब से पहले यह चेष्टा की गई कि जेल में पड़े क्रान्तिकारियों को जेल से निकाला जाए। पर इस कार्य में भी सफलता नहीं मिली। सफलता मिल तो सकती थी, पर उसके लिए बहुत दाम देने की ज़रूरत थी, जो उचित न होती। यदि एक व्यक्ति को जेल से छुड़ाने के लिए दस क्रान्तिकारी मारे जाते, तो यह उचित बात न होती। *क्रमशः*

भारतीय देशभक्तों के कारावास और बलिदान की कहानी से साभार

गतांक से आगे ...

सत्यार्थ प्रकाश में आधुनिक विज्ञान

● वेद प्रकाश गुप्ता

14, पृष्ठ 347, समुल्लास 12 में– "नास्तिक–हे मूढ़! जगत् का कर्त्ता कोई नहीं, किन्तु जगत् स्वयं सिद्ध है।

आस्तिक–कर्त्ता के बिना कोई कर्म और कर्म के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता। इसलिए ईश्वर जगत् का कर्त्ता है। जो जगत् स्वयं सिद्ध होता तो तुम्हारे खेत के गेहूँ स्वयं पिसान, रोटी बन, तुम्हारे पास आकर, मुख में घुस कर, पेट मे चली जाय तो बिना ईश्वर के जगत् स्वयं बन जाय।

विज्ञान के तथ्य–बिंदु 4 में विज्ञान के लिखे पहले नियम से हम जानते हैं कि कोई पदार्थ बगैर बल लगाये, अपने आप गतिमान नहीं हो सकता है। अतः बगैर कर्त्ता के कार्य के कोई कार्य नहीं हो सकता है। यही बात यहाँ ऋषि ने लिखा है। जब कोई कार्य बगैर किसी के किये नहीं हो सकता है अतः इस विश्व एवं ब्रह्माण्ड का सृजन करने वाला कोई न कोई कर्त्ता होगा ही, जिसे ही ईश्वर कहा जाता है। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

15, पृष्ठ 375, समुल्लास 12 में–"उत्तर– यह तुम्हारी बात लड़केपन की है। प्रथम तो देखो, जहाँ छिद्र और भीतर के वायु का योग बाहर के वायु के साथ न हो तो वहाँ अग्नि जल ही नहीं सकता। जो इसको प्रत्यक्ष देखना चाहो तो किसी फानूस में दीप जलाकर सब छिद्र बंध करके देखो तो दीप उसी समय बुझ जायेगा। जैसे पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्य आदि प्राणी बाहर के वायु के योग के बिना नहीं जी सकते, वैसे अग्नि भी नहीं जल सकता।''

वैज्ञानिक तथ्य–रसायन विज्ञान के अनुसार किसी पदार्थ के दहन यानी ज्वलन के लिए आक्सीजन गैस का होना अतिआवश्यक है। ऑक्सीजन गैस हवा का एक प्रमुख घटक होता है। फानूसों लालटेनों, पेट्रोमैक्सों आदि में हवा के अंदर घुसने के लिए नीचे कई छोटे–छोटे छिद्र तथा दहन के पश्चात् कार्बन डाइआक्साईड आदि गर्म हवा के बाहर निकलने के लिए ऊपर छोटे–छोटे छिद्र होने अतिआवश्यक है, अन्यथा इन उपकरणों में तेलों का दहन नहीं हो सकेगा जिससे प्रकाशादि नहीं हो सकता है। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

16, पृष्ठ 398, समुल्लास 13 में– "प्रश्न–क्या मुर्दे के धुआँ में दुर्गंध नहीं होता?

उत्तर–हाँ! जो अविधि से जलावे तो थोड़ा सा होता हैं, परंतु गाड़ने आदि से बहुत कम होता है।" इसी के साथ अंत्येष्टि की विधि लिखा है जो विज्ञान सम्मत है।

विज्ञान के तथ्य–यदि शव को अविधि यानी चारों तरफ से प्रचुर, प्रचंड ज्वालाओं से नहीं जलाई जाती है तब शव का भली–भांति दहन नहीं हो पाता है जिससे मांस आदि के भाप यानी वाष्प, धुआँ फैलने से दुर्गंध होती है। अतः यह विधि विज्ञान सम्मत है।

17, पृष्ठ 418, समुल्लास 13 में–"91. उन दिनों के क्लेश के पीछे तुरंत सूर्य अंधियारा हो जाएगा और चाँद अपनी ज्योति ना देगा, तारे आकाश से गिर पड़ेंगे और आकाश की सेना डिग जाएगी।

समीक्षक–वह जी ईशा! तारों को किस विद्या से आपने गिर पड़ना जाना और आकाश की सेना कौन सी है, जो डिग जाएगी? जो कभी ईशा थोड़ी भी विद्या पढ़ता तो अवश्य जान लेता कि यह तारे सब भूगोल हैं, क्यों गिरेंगे।

विज्ञान के तथ्य –विज्ञान के भूगोल शास्त्र के अनुसार हम जानते हैं कि भूमंडल में तारे कभी नहीं गिरते है और वह निर्धारित मार्ग पर निर्धारित गति से निरंतर घूमते रहते हैं। अतः बाईबल में लिखा तथ्य असत्य है। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

18 , पृष्ठ 418, समुल्लास 13 में–"92. आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परंतु मेरी बातें कभी न टलेंगी।

समीक्षक–यह भी बात अविद्या और मूर्खता की है। भला! आकाश हिल कर कहाँ जायेगा? जब आकाश अतिसूक्ष्म होने से नेत्र से दीखता नहीं तो इसका हिलना कौन देख सकता है। और अपने मुख से अपनी बड़ाई करना अच्छे मनुष्यों का काम नहीं।

विज्ञान के तथ्य–विज्ञान के रसायन शास्त्र से हम जानते हैं कि पृथ्वी चारों ओर से रंगहीन, गंधहीन और पूर्णतः पारदर्शी वायु से घिरा हुआ है जिसे ही आकाश कहते हैं, जो आँखों से दिखाई नहीं देता है। जब यह वायु पृथ्वी को चारों ओर से घेर रखा है तब यह हिल कर कहीं नहीं जा सकता है। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

19, पृष्ठ 430, समुल्लास 13 में– "समीक्षक–अब देखिए इन गपोड़े पुराणों से भी बढ़कर है, वा नहीं? ईसाइयों का ईश्वर कोप करते समय बहुत दुखित हो जाता होगा और जो उसके कोप के कुंड भरे हैं, क्या उसका कोप जल है वा अन्य द्रवित पदार्थ है कि जिससे कुंड भरे हैं, और सौ कोस तक रुधिर का बहना असंभव है, क्योंकि रुधिर वायु लगने से झट जम जाता है, पुनः क्यों तर बह सकता है? इसलिए ऐसी बातें मिथ्या होती हैं।।132।।

विज्ञान के तथ्य–हम सभी प्रत्यक्ष अनुभूति से जानते हैं कि जब भी किसी प्राणी को चोट लगने से या कटने–फटने से जब रुधिर बहता है तब वह कुछ ही क्षणों में जम जाता है। विज्ञान के प्राणी शास्त्र से भी जानते हैं कि रुधिर मिनटों में जम जाता है और वह सौ कोस, क्या एक कोस भी नहीं बह सकता है। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

20, पृष्ठ 449, समुल्लास 14 में– "42 मेरा मालिक सूर्य को पूर्व से लाता है बस तू पश्चिम से ले आ, जो काफिर था हैरान हुआ, निश्चय अल्लाह पापियों को मार्ग नहीं दिखलाता।

समीक्षक–देखिए यह अविद्या की बात! भला सूर्य न पूर्व से पश्चिम और ना पश्चिम से पूर्व कभी आता जाता है, वह तो अपनी परिधि में घूमता रहता है, इससे निश्चित जाना जाता है कि कुरान के कर्त्ता को खगोल विद्या न आती थी। जो पापियों को मार्ग नहीं बतलाता तो पुण्यात्माओं के लिए भी मुसलमानों के खुदा की आवश्यकता नहीं, क्योंकि धर्मात्मा तो धर्म मार्ग में ही होते है,...भूल है।।4।।"

विज्ञान के तथ्य–विज्ञान के भूगोल शास्त्र के अनुसार हम जानते हैं कि भूमंडल में पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमते हुए, सूर्य के चारों ओर परिधि में निरंतर घूमती रहती है जिससे ही पूरी पृथ्वी पर दिन–रात एवं गर्मी, बरसात एवं ठंडक के मौसम होते हैं। अतः कुरान में लिखा तथ्य असत्य है। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

क्रमशः

ई. 5 चन्द्रा अपार्टमेंट,
115 कबीर मार्ग (निकट योजना भवन)
लखनऊ, उत्तर प्रदेश –226001
मो. 9451734531,
email- vedpragupta@gmail.com

☞ पृष्ठ 03 का शेष

प्रभु दर्शन

करना, सत्संग में जाकर प्रभु–कीर्तन करने के बजाय क्लब–घर में जाकर ताश–जुआ खेलना आदि ही 'जीवन स्तर' ऊँचा करने के साधन समझ लिये गये हैं ऐसे साधनों से 'जीवन–स्तर' ऊँचा हो रहा या नीचा? हाँ थालियाँ तथा प्लेटें निस्सन्देह ऊँची हो गई हैं। वे चौके से उठकर मेज़ पर आ गई हैं। परन्तु 'जीवन–स्तर' का पतन हो गया। 'जीवन–स्तर' ऊँचा होने का अर्थ तो यह है कि रहें सादगी से और जीवन में नम्रता हो; सत्य, सेवा, स्वाध्याय तथा सद्व्यवहार की ज्योति चमकते लगे। परन्तु अब तो जीवन स्तर की ऊँचाई केवल धन से मापी जाने लगी है। यह धन एकत्र करने के लिए हर प्रकार का छल–कपट अन्याय और दुर्व्यहार होने लगा है। यह जो उल्टी हवा बहने लगी है, जिसने चरित्र का सर्वनाश कर दिया है, इसे पूर्ण प्रयत्न से बदल देना होगा। जहाँ आपने–आपको परित्र चरित्रवाला बनाना होगा, वहाँ मनुष्य–समाज पर भी यही रंग चढ़ाना होगा। वेद भगवान् का यह आदेश सारे संसार को लेना चाहिए।

ओ३म् प्रत्नान्मानादध्या ये समस्वरन्,
श्लोकयन्त्रासो रभसस्य मन्तवः।
अपानक्षासो बधिरा अहासत् ऋतुस्य,
पन्थां तरन्ति शुष्कृतः ।।

ऋ. 9.73.6 ।।

'परम देव परमात्मा की ओर से विचित्र शक्तियाँ उठती रहती हैं। भक्तिभाव और प्रेरणावाले उन्हें पहचानते हैं। अन्धों और बहरों की वहाँ पहुँच नहीं। दुष्कर्मी सत्य मार्ग को पार नहीं कर सकते।"

ओ३म् ऋतुस्य गोपा न दभाय सुक्रतु स्त्री ष
पवित्राह्न द्यऽन्तर दधे।
विद्वान् त्स विश्वा भुवनामि पश्यत्यवाजुष्टान्
तत् विध्यति कर्ते अव्रतान।।

ऋ. 9.73.8. ।।

"सत्य के पालक प्रभु का बल अद्भुत है। उसे कौन ठग सकता है? वह अत्यन्त शुद्ध बारीक शोधवाला है। उससे कुछ छिपा हुआ नहीं। आचरण–शून्य लोगों से उसका प्रेम नहीं होता, इसलिए उनका विकास रुका रहता है।"

ओ३म् ऋतुस्य तन्तुर्विततः पवित्र आ
जिह्वाया अग्रे वरुणस्य मायया।
धीराश्चित् तत् समिनक्षन्त आशताऽत्रा
कर्तमव पदात्यप्रभुः।।

ऋ. 9.73.6 ।।

"जहाँ शुद्ध व्यवहार नहीं है? वहाँ सत्य का सूत्र विद्यमान है। पापनाशक भगवान् की विचित्र शक्ति से (यह सूत्र हृदय से पैदा होकर) जिह्वा के सिरे तक पहुँचता है। सुकर्मी लोग इसे भली प्रकार पा सकते हैं। कर्महीन का मार्ग नीचे की ओर रहता है।"

क्रमशः

मृत्यु काल, ब्रह्म और समय

● श्रीमती मनीषा विमल

प्रायः सामान्य रूप से एक वाक्य कहा जाता है। "फलां व्यक्ति का काल आ गया बेचारा चला गया।" सुन कर बड़ा अजीब लगता है। काल शब्द जन साधारण में मृत्यु के रूप में ही प्रयुक्त किया जाता है।

किन्तु काल एक शब्द है जिसका अर्थ है– 'समय' जो निर्बाध गति से चलता रहता है। कभी लौट कर नहीं आता, सृष्टि में जो भी चेतना है, गति है वह काल के कारण होती है। अथर्वा ऋषि कहते हैं– "काल सबका गृहिता (ज्ञान) दाता एवं कर्त्ता है।" जो निर्गुण, निराकार, सगुण, साकार, अनादि, अनन्त, सर्वव्यापक व सर्वशक्तिमान है। परिवर्तन का कारण है आधार" इसीलिए कबीर दास जी कहते हैं–

"काल कर से आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होयेगी, बहुरि करेगा कब।।"

शास्त्रों के अनुसार मास और पक्ष काल के शरीर हैं, दिन/रात वस्त्र तथा ऋतुयँ इन्द्रियाँ हैं। यह काल संज्ञक ब्रह्म है। स्वतंत्र तत्त्व होने पर भी प्राणियों के शुभाशुभ कर्मों का फल समयानुसार ही देता है।

महाभारत में एक कथानक आता है– "गौतमी नाम की एक ब्राह्मणी का पुत्र बारह वर्ष की अवस्था में ही सर्प के काटने से मर गया। उसको रोता देख एक शिकारी उस सर्प को पकड़ कर ले आया और बोला, 'माता तेरे पुत्र को इस सर्प ने काटा है इसको दंड दें'। तभी मनुष्य की आवाज में सर्प बोला "इसमें मेरा कोई कसूर नहीं हैं, मुझे तो मृत्यु ने आज्ञा दी थी"। सर्प ने मृत्यु को बुलाया। मृत्यु बोली "इसमें मेरा कोई दोष नहीं है मुझे तो काल ने आज्ञा दी थी। तभी काल आया और बोला "माता इसमें मेरा कोई दोष नहीं है यह तो इसके कर्मों का फल है और तुम्हें यह दुःख प्राप्त होना था।"

इस कथानक से आशय है कि इस संसार में प्राणियों के सभी कार्य पारमार्थिक हों चाहे वह व्यावहारिक एवं समय, परिस्थिति व कर्मफल से काल के अधीन होते हैं।

विद्वानों व शास्त्रों का कहना है कि संसार के परिवर्तन को बताने वाला काल है। जैसे प्राणी पैदा होता है धीरे–धीरे बढ़ता जाता है। कर्म करता है आयु प्राप्त करता है और बच्चा, युवक, प्रौढ, वृद्ध होकर मृत्यु को प्राप्त होता है। इसी तरह औषण, वनस्पति, पशु–पक्षी सभी काल के अनुसार जीवन यापन करते हैं उसी से काल का ज्ञान होता हैं काल का अपना कोई रूप, आकार नहीं है। किन्तु ब्रह्म की तरह यह भी शाश्वत है।

काल के प्रभाव से ही वायु ,पृथिवी, आकाश आदि के परमाणु संयोग पाकर साकार होते हैं और प्राणियों पर उपकार करते हैं। जैसे वर्षा होने से पृथिवी पर हरियाली छा जाती है। ग्रीष्म होने से फसले पकने लगती हैं। शीत में पानी जम कर बर्फ बन जाता है और समय आने पर पिघल कर जल बन कर नदियों में बहने लगता है। इस तरह मनुष्य का रूप, रंग, यौवन, धन, बिना पुरुषार्थ किए व्यर्थ हैं। समय आने पर ही फल मिलता है किसी कवि ने ठीक ही कहा है–

"धीरे धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा ऋतु आए फल होय।।

अथर्व वेद के एक मंत्र में काल का पूरा स्वरूप स्पष्ट हो जाता है।

काले तपः काले ज्येष्ठं, काले ब्रह्म समाहितम्।
कालो ही सर्वस्येश्वरो यः पितासीत् प्रजापतेः।।

19/53/8

शब्दार्थ = उचित काल में तप, समयानुसार बड़प्पन तथा ब्रह्म ज्ञान समाहित है। निश्चय ही काल सबका ईश्वर है जो सब प्रजा के उत्पादक का पिता है।" अर्थात् उचित काल में ही तप, ज्ञान, ऐश्वर्य प्राप्त होता है। अथर्ववेद के उन्नीसवें काण्ड में तरेपन व चौवन सूक्त काल के विषय में ही हैं। सूक्त का प्रथम मंत्र बहुत महत्वपूर्ण है–

"कालो अश्वो बहति सप्त रश्मिः,
सहस्त्राक्षो अजरो भूरितेताः।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितः, तस्य
चक्रा गुवनानि विश्वा।।

19/53/1

शब्दार्थ–**कालो अश्वो** = समय रूप घोड़ा, **बहति** = चल रहा है **सप्त रश्मिः** = सात किरणों वाला, सप्त रस्सियों वाला, **सहस्राक्षे** = हजारों आँखों वाला (हजारों धुरों को चलाने वाला) **अजरः** = कभी जीर्ण व बूढ़ा न होने वाला, **भूरितेताः** = महाबली तमा = उस पर, रोहन्ति = सवार होकर, कवयः = दूरदर्शी, क्रान्तदर्शी **विपश्चितः** = ज्ञानी लोग ही घूम रहे हैं, **विश्वा** = समस्त सत्ता सब वस्तुएँ, सब भुवन उसके चक्र हैं। अर्थात् चक्रवत घूम रहे हैं।

भावार्थ– काल रूपी अश्व जो हजारों आँखों वाला महाबली, कभी न बूढ़ा या रोगी न होनेवाला, सृष्टि में सात रस्सियों या रश्मियों से बँधा संसार रथ को चला रहा है जिस पर ज्ञानी व दूरदर्शी मनुष्य चढ़ते हैं ओर इस विश्व के चक्र को पार करते हैं।

इस मंत्र में मुख्य शब्द आए हैं– 1. काल, 2. अश्व, 3. सप्त रश्मि, 4. विपश्चित या ज्ञानी, 5. दूरदर्शी

सर्वप्रथम बात करते हैं काल व सात रश्मियों की। कहीं–कहीं इन रश्मियों को सात रस्सियाँ भी बताया गया है। क्योंकि सृष्टि में सात तत्व काम करते हैं – 1. काल तत्व, 2. ब्रह्माण्ड के ग्रह नक्षत्रों का पृथिवी पर प्रभाव, 3. प्राणी जगत्, 4. पंच तत्व (आकाश, जल, वायु, अग्नि, पृथिवी), 5. जड़ जगत् (वृक्ष, औषध आदि), 6. लोक, 7. सात प्रकार के अन्न।

प्रथम काल तत्त्व को जानते हैं– काल का संबंध है गणना, समय, गति, परिवर्तन से। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 164 सूक्त का बारहवाँ मंत्र काल के समस्त अवयवों का वर्णन करता है। मंत्र है–

पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव
आहूः परे अर्द्धे।
पुनीषिणम् अथेमें अन्य उपरे विचक्षणं
सप्त चक्र षडमे आहुरर्पितम्।

यह काल चक्र **पंचपाद** = पाँच पाद वाला है, 'क्षण, महुर्त, प्रहर, दिवस व पक्ष। **पितरं** = पिता के समान पालन करने वाला (अर्थात् ब्रह्म) **द्वादशाकृतिं** = बाहर मास जिसके आकार है (चैत्र, बैशाख, जेष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, अगहन, पौष, माघ, फाल्गुन) **दिव आहू** = प्रकाशमान सूर्य जो आधे भाग में चमकता है। **पुरीषिणम्** = मिले हुए पदार्थों को अलग–अलग करने वाला–सम्वतसर। **षडरे** = छः ऋतुओं को बताने वाला (बसन्त, गीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर) **सात चक्र** = सप्ताह के सात दिन (रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, वृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार) (यह नाम अथर्व ज्योतिष में बताए गए हैं मंत्र द्वारा)

"आदित्य सोमा भौमश्च तथा बुध बृहस्पतिः
भार्गव श्नैश्चरश्चैव एते सहा दिनाधियाः।।"

अर्थव ज्योतिष 160

क्योंकि काल की आत्मा सूर्य को बताया है अतः समस्त गणना सूर्योदय के अनुसार ही की जाती है।

भावार्थ– पाँच पादे और बाहर आकृतियाँ मास रूप में आकाश के ऊपरी भाग से सूर्य का प्रकाश जो आधे भाग में पृथिवी पर पड़ता है जिससे दिन–रात बनते हैं प्रतिपल चलता रहता है और परिवर्तित होता रहता है यह काल कहलाता है जिसके द्वारा पृथिवी पर प्रभाव पडता है सर्दी गर्मी वर्षा आदि होते हैं प्रणियों का जीवन चलता है। प्राणी कर्मशील रहता है। एक चक्र के रूप में गतिमान है।

ऋग्वेद के ही एक अन्य मंत्र का भी कुछ ऐसा ही है–

द्वादशारं नहि तज्जराय वर्तर्ति चक्रं परि
द्यामृतस्य। आ पुत्रा।
अग्ने मिथुनासो अत्र सत शतानि
विंशतिश्च तस्थुः।।

ऋ.1.164.11

इस संसार में बारह अरेवाला, बारह मास जिसके अरे हैं काल चक्र निरंतर चला जा रहा है। यह कभी जीर्ण नहीं होता द्यावर्ति– इस महान अन्तरिक्ष में चला जा रहा है। यह काल चक्र बिल्कुल (ऋत) नियमित गति वाला है, जो आगे आगे ही चलता है। यह सात सौ बीस दिन रात (अरे) के रूप में ठहरा हुआ है। इस लोक के समान सारे ब्रह्माण्ड में इसकी संख्या इसी प्रकार है। जो सृष्टि के मूलभूत उत्पत्ति के कारण है। जिसका ज्ञान प्राप्त कर मनुष्य को मोक्ष प्राप्ति का प्रयत्न करना चाहिए।

इस काल रूपी अश्व पर क्रान्तदर्शी व ज्ञानी मनुष्य सवारी करते हैं तथा मृत्यु को जीत कर अजर अमर व यशस्वी बन जाते हैं। उपनिषदकार ने काल की तुलना अश्व से की है। अश्व के चार प्रकार बताए गए हैं 1. हंय = अर्थात छोड़ने योग्य–भौतिक पदार्थों का उपयोग निर्लिप्त भाव से करना, ऐसे ही व्यक्ति क्रान्तदर्शी होते हैं जो उन्नति के शिखर पर पहुँच जाते हैं। जैसे महर्षि दयानंद, महात्मा नारायण स्वामी, गौतम बुद्ध, क्रांतिकारी, मदर टेरसा आदि।

2. वाजी = अन्न वाला–अर्थात् संसार में रह कर सम्पूर्ण ऐश्वर्य सुख सम्पदा के साथ जीवन व्यतीत करने वालां इस श्रेणी में बड़े–बड़े उद्योगपति, मिल मालिक जैसे व्यक्ति आते हैं।

3. अर्था = वध करने का स्थान– इस श्रेणी में कुटिल व हिंसक प्रवृत्ति के व्यक्ति आते हैं जो स्वयं तो परेशान रहते ही हैं दूसरों को भी अपनी कुटिल चालों व दुष्प्रवृत्ति से हानि पहुँचाते हैं जैसे आतंकी, हत्यारे, लुटेरे आदि।

4. अश्व = भोजन मिलने का स्थान– अर्थात साधारण जीवन जीने वाले मनुष्य जो साधारण रूप से रोटी कपड़ा व मकान प्राप्त करके ही सन्तुष्ट रहते हैं। इनके जीवन का उद्देश्य ही कालानुसार जीवन व्यतीत करना है। इस प्रकार काल अश्व के रूप में सामाजिक जीवन जीने के लिए मनुष्य को कर्म करना पडता है। कर्म करने के लिए ईश्वर ने मनुष्य को एक सुन्दर शरीर दिया है, जिसमें सात ऋषि रहते हैं– 1. नेत्र, 2. कर्ण, 3. नासिका, 4. त्वचा, 5. जिह्वा, 6. मन, 7. बुद्धि। इनके सात आकर्षण हैं– नेत्र का रूप कर्ण का शब्द, नासिका का गंध, त्वचा का स्पर्श, जिह्वा का स्वाद, मन का संकल्प विकल्प तथा बुद्धि का ज्ञान। इन आकर्षणों को प्राप्त करने के लिए व शरीर को चेतन रखने के लिए शरीर प्राणों से बंधा है। शरीर सात धातुओं से बना है– जो शरीर की चेतना को जागृत रखते हैं तथा आकृति देते हैं रक्त, रस, मज्जा, मेद, शुक्र अस्थि तथा मांस सम्पूर्ण शरीर को चेतन बनाने वाला मुख्य उपकरण आत्मा है जो शरीर में रह समस्त क्रियाकलापों की दृष्टा हैं इस आत्मा के चार उपकरण हैं– भाव, संवेग, भूख, प्यार, ज्ञान व बल प्राप्त करता है। दुःख का व खुशी का अनुभव करता है। इसी कारण मनुष्य कर्म करता है।

क्रमशः

2/25 आर्यवानप्रस्थाश्रम
ज्वालापुर, हरिद्वार
मो. 9760181 62

गतांक से आगे ...

स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ

● भद्रसेन

इस उपहास को और सरस बनाते हुए संयोजिका ने कहा– हम ने आज के अल्पाहार में 'बड़ों' का विशेष प्रबंध किया है।

प्राध्यापिका–सुदर्शना! बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, तूने मेरी बड़ी सहायता की है। हाँ, नारी के ब्रह्मापन को दर्शाने के लिए यह रुचिकर 'बड़ा' बहुत अधिक सहायक है। यह 'बड़ा' किसी की ब्रह्मत्व प्राप्ति की प्रक्रिया को विशेष रूप से प्रबल करता है क्योंकि प्रत्येक पाककला विशेषज्ञ और बड़ा प्रेमी अच्छी प्रकार से जानता है, कि यह स्वादु बड़ा वही बढ़िया होता है। जिस की दाल अच्छी, स्वच्छ, पूरी भीगी हुई, खूब पिसी, उचित तली हुई और फिर यथार्थ ढंग से उबाल कर यथासमय दही में डाला गया 'बड़ा' ही स्वादु, रुचिकर होता है। जैसे कि बड़े के बनाने वाले सारी की सारी प्रक्रिया को अपनाते हैं, पर सब के बड़े एक जैसे रोचक, स्वादु नहीं होते। इस भेद का कारण कहीं न कहीं किसी कमी का रह जाना है। या किसी न किसी अन्तर का आ जाना। जो भी इन सभी पहलुओं पर पूरा ध्यान देता है उसी के हाथ में विशेषता आती है, उसी का 'बड़ा' अच्छा, स्वादु, रुचिकर और बढ़िया होता है, क्योंकि प्रत्येक नगर में बड़े बनाने वाले तो बहुत होते हैं, पर प्रसिद्ध तो दो–चार ही होते हैं। 'बड़े' की तरह किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रक्रिया पर ध्यान देता है, इस को अपनाता है, वही वहाँ बड़ा बनाने में सफल होता है।

ठीक इसी प्रकार वह स्त्री ब्रह्मा कहला सकती है, जो माता के कर्तव्य के प्रति अथ से इति तक माता मन्दालसा, कौशल्या, जीजाबाई की तरह सजग होती हैं हम सब इस भोज्य 'बड़े' की प्रक्रिया पर जितना–जितना ध्यान देंगी, उतना–उतना सरलता से 'स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ' के मूलमंत्र को समझ सकेंगीं। यह 'बड़ा' संस्कृत भाषा के प्रत्यय की दृष्टि से (न कि प्रयोग में) स्त्रीलिंग है। उस की स्वादुता, रूपता, आकर्षकता, गुणवत्ता आदि अनेक सादृश्य स्त्री के समान प्रतिभाषित होते हैं।

ब्रह्मा के इस भाव को सामने रख कर ही मैं हर नारी से कहती हूँ, कि अपने अन्दर आत्मविश्वास, दृढ़इच्छा, तत्परता को उभारिए (उद्धदेदात्मानात्मान् नात्मानमवसादयेत् गीत 6,5) यतो हि तुम महान रचयित्री/निर्मात्री हो, फिर आत्महीनता का अवसर या प्रसंग क्यों और कैसे?

जहाँ तक प्रश्न है, कि मेरे अन्दर ये विचार कैसे आए? जैसे कि मैंने पहले भी कहा है, कि मेरी दादी जी ने महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों के आधार पर नारी जीवन के हर पहलू पर दिशा निर्देश किया। दादी जी ने मुझे एक पुस्तक **'नारी जीवन'** दी। जिसमें नारी के ब्रह्मापन को चरितार्थ करने के लिए पूरी प्रक्रिया दर्शाई गई है। जैसे **'बड़े'** को अच्छे रूप में बनाने के लिए अथ से इति तक की पद्धति अपेक्षित हे। वैसे ही नारी जीवन का आरंभ से ब्रह्मापन की प्राप्ति तक की कैसी गति विधि होनी चाहिए। इस की वहाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती के वाक्यों सहित पूरी प्रक्रिया है। जैसे कि गर्भकाल , प्रसव, शिशु की संभाल, उसका पालन–पोषण, शिक्षा, उस की पढ़ाई का पाठ्यक्रम, दिनचर्या, वाग्दान, विवाह निर्णय, परिवार संचालन आदि किस–किस ढंग से हों। ये सारी बातें महर्षि दयानंद ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ समुल्लास में बड़े विस्तार से बताई हैं।

इस दृष्टि से संस्कार विधि भी महत्वपूर्ण है। जिसमें जातकर्म जैसे सोलह संस्कारों की केवल पूजा–पाठ की विधि ही वहाँ नहीं बताई, अपितु उस–उस अवसर पर जो कुछ व्यावहारिक रूप में भी होना चाहिए। उस का भी पूरा वर्णन किया गया है। अर्थात संस्कार विधि में गर्भाधान से लेकर जीवन के हर पहलू का वहाँ वर्णन है। जैसे कि गर्भकाल में गर्भवती की निराशा को दूर करने के लिए पुंसवन, सीमान्तोन्नयन तदनन्तर जातकर्म। शिशु उत्पत्ति (प्रसव) के लिए अपेक्षित कर्म, नामकरण, नाम रखना, निष्क्रमण घर से बाहर जाना–आना, कर्णवेध, चूड़ाकर्म (शुरु के बालों को काटना), यज्ञोपवीत (शिक्षा का आरंभ), वेदारंभ (धर्म से जुड़ना), समावर्तन (शिक्षा पूर्णकर कार्यक्षेत्र में आना) विवाह आदि जीवन के जो भी पड़ाव हैं। उन स्थिति में कैसा जीवन जिया जाए?

और विशेष बात तो यह है, कि यह सारी चर्चा वहाँ संवाद शैली में प्रस्तुत करके विविध प्रसंगों को सरल–सरस बनाने का प्रयास किया गया है। मेरी दृष्टि से आर्य साहित्य में आने आप में यह अनूठी रचना हैं अतः **'गागर में सागर'** भरने के अनुरूप हम यह कह सकते हैं कि नारी कैसी महान हो सकती है कि यहाँ पूरी प्रक्रिया, रूपरेखा, योजना है।

हाँ, यहाँ तक मूलमंत्र की बात है, इस संबंध में मेरा विचार है कि प्रत्येक महिला को अपने अन्दर आत्मविश्वास भर कर इस को अपना **'मूलमंत्र'** बनाना चाहिए। यह उन की समस्याओं के समाधान में सहायक, दिशासूचक हो सकता है। यह ठीक है, कि यह मंत्र कोई जादू की छड़ी नही, चमत्कार नहीं है, अपितु, लक्ष्य सिद्धि का दिशादायक अवश्य है। महर्षि दयानंद का इस संबंध में स्पष्ट विचार है– 'जो मंत्र अर्थात् शब्दमय होता है उस से कोई द्रव्य उत्पन्न नहीं होता। .... वैसा मंत्र अर्थात् विचार से – (यहाँ सर्वत्र स्वाती वेदान्द तीर्थ सम्पादित स्थूलाक्षर सत्यार्थप्रकाश समुल्लास–11, पृष्ठ 237 संख्या है)

'जो तुम्हारे अधीन मंत्र हैं उन से तुम जो चाहे सो करा सकते हो तो उन मंत्रों से देवताओं को वश कर राजाओं के कोष उठवा कर अपने घर में बैठकर के आनन्द क्यों नहीं भोगते? 11,330

'जैसे आजकल पोपलीला मंत्रपुरश्चरण आशीर्वाद बीज ओर भस्म की चुटकी देने से भूतों का निकालना रोगों का छुड़ाना भोले मुष्यों को भ्रम में फंसाने के लिए ये बातें हैं। (63)13,459

इस चर्चा के विशेष ज्ञान के लिए **'अविस्मरणीय स्मारक आर्यसमाज'** देखिए। हाँ पूर मंत्र इस प्रकार है– **अधः पश्यस्व मोपरि सं तरां पादको हर।**

मा ते कशप्लवौ दृशन् स्त्री हि ब्रह्मा बाबूविथ।। ऋ. 8,33,2

श्री जयदेव की कृत अर्थ – स्त्री को उपदेश – 'हे स्त्री! तू अधर (पश्चस्व) नीचे देख, विनयशील हो (मा उपरि) ऊपर मत देख, ... मत हो। (पादकौ) दोनों पैरों को (सं तरां हर) अच्छी प्रकार संभाल कर रख, टखनों को काई भी देखे। ऐसे विनयाचार से तू (हे स्त्री) स्त्री होकर भी अवश्य (ब्रह्मा बभूविभ) वेदवत्त व पूज्या हो सकती है।'

जितने भी उत्तरदायित्व पूर्ण पद पर होता है। उसके प्रति सभी समझते हैं, कि इसके हर व्यवहार में वही दायित्व, उच्चता हो, वह चाहे बोलने, चलने, वस्तुओं के आदान–प्रदान, वस्त्र धारण आदि की कोई भी बात हो। अर्थात् उस के प्रत्येक व्यवहार से गौरव झलकना चाहिए। जिससे उसे गौरव व सम्मान प्राप्त हो। कोई भी किसी भी स्थिति में उस की उपेक्षा, अपमान न करे। नारी का पूर्णत्व (माता ताभ्यो गरीयसी) मातापन में है, सभी कम से कम अपनी माता के प्रति पूज्यभावना होती है। अतः उसी उच्चस्थल पर अपने आप को स्थापित कर व्यवहार करें। यही वस्तुतः श्रुति का संदेश है कि तेरी किसी भी चेष्ठा, बात से हलकापन दर्शाने का किसी को अवसर नहीं मिलना चाहिए। अतः हे महिमामयी! तू उठते–बैठते–चलते हुए पैर, आँख आदि का प्रयोग शिष्ट रूप में करें। तेरी चाल से भी अशिष्टता प्रकट न हो। **कशप्लव** में द्विवचन है। और कशविकास, फैलाव अर्थ में है तथा प्लव = उछाल अर्थ में। अतः विशेष रूप से हिलाने पर जिन अंगों में फैलाव, उछाल दृष्टिगोचर होता है। स्वचलित टखने की अपेक्षा स्तन, जंघा, बाजू लिए जाए, तो अधिक अच्छा प्रासंगिक हो।

इस सारे का भाव यह है, कि मंत्र की भावना को कसौटी बनाकर साधना का मार्ग अपनाना चाहिए। इसी के साथ चर्चा को पूर्ण करते हैं।

182 शालीमार नगर
होशियारपुर, पंजाब–146001

आर्य जगत् सम्बंधी घोषणा

(फार्म–4 नियम 8 देखिये)

1. प्रकाशन का स्थान	:	आर्य समाज बिल्डिंग, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001
2. प्रकाशन–अवधि	:	साप्ताहिक
3. मुद्रक का नाम	:	एस.के. शर्मा
4. क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
5. मुद्रक का पता	:	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001
6. प्रकाशक का नाम	:	एस.के. शर्मा
7. क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
8. प्रकाशक का पता	:	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001
9. सम्पादक का नाम	:	पूनम सूरी
10. क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
11. सम्पादक का पता	:	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001
12. उन सभी व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार–पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत के हिस्सेदार हों–	:	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001

मैं एस के शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है।

दिनांक 01–03–2020

एस के शर्मा
प्रकाशक

'मेरे जीवन के दो महापर्व'

● खुशहाल चन्द्र आर्य

वैसे तो मेरे 25–26 जगहों पर कई संस्थाओं व गुरुकुलों द्वारा अभिनन्दन हो चुके हैं, परन्तु आर्यसमाज कलकत्ता ने 29–12–2019 को ऋषिकेश पार्क में अपने वार्षिक उत्सव पर एक प्रशस्ति पत्र देकर तथा शाल ओढाकर जो अभिनन्दन किया उसका मैं एक विशेष महत्त्व मानता हूँ। कारण, आर्य समाज कलकत्ता आर्य समाज बड़ाबाजार जिसका मैं 65–66 सालों से सदस्य रहा हूँ तथा सभी बड़े पदों जैसे प्रधान, मंत्री, कोषाध्यक्ष, उप–प्रधान आदि पर रहकर सेवा की है। धन संग्रह की जिम्मेवारी मेरे ऊपर विशेष रहती है। अब मैं समाज का संरक्षक व ट्रस्टी हूँ। उसका बड़ा भ्राता के समान है। छोटा भाई, बड़े भाई का अभिनन्दन या सम्मान तो करता ही है। परन्तु बड़ा भाई, छोटे भाई का सम्मान करें, यह तो छोटे भाई के लिए गौरव व हर्ष की बात है। मैं इसको अपने जीवन का पहला महापर्व मानता हूँ। वैसे तो छोटे–मोटे केवल फूलमाला पहनाकर तो अनेक स्थानों पर सम्मानित हो चुका हूँ परन्तु विशेष अभिनन्दन या सम्मान योजनाबद्ध तरीकों से जो हुए हैं उनकी शृंखला इसी भाँति है।

1. क्षेत्रिय अग्रवाल विकास ट्रस्ट ने 1998 में बिरला सभागार जो बिड़ला मंदिर के नीचे है, उसमें अग्रवाल मेधावी छात्रों के साथ मेरा भी अग्रवाल कवि के रूप में, मेरी एक कविता ''अग्रवालों की गौरव गाथा'' शीर्षक पर, अभिनन्दन किया गया था। उसमें मुझे एक चाँदी का लॉकेट जिममें अग्रसेन महाराज का चित्र है, उसको पहनाकर किया गया था। उस सभा के मुख्य अतिथि श्रीमामराज अग्रवाल थे।

2. 2अक्टूबर 2008 में लखनऊ की एक संस्था आशियाना परिवार जिसका कृष्ण कुमार सिंघनिया प्रधान था, ने मेरे पास एक पत्र भेजा। जिसमें मुझे आने के लिए लिखा। मेरे के.के. सिंघानिया से गो रक्षक होने के नाते अच्छे सम्बन्ध थे। इस संस्था ने दो हजार फ्रीडम फाइटर्स (स्वतन्त्रता सेनानियों) का अभिनन्दन किया था। उन्हीं के साथ मेरा भी एक अच्छा गोरक्षक के नाते एक शाल ओढाकर अभिनन्दन किया था।

3. ताः 7–3–2006 में बहल (हरियाणा) आर्य समाज की स्थापना के समय मुझे और आदरणीय श्री दीनदयाल जी गुप्त को बुलाया गया था और हम से आर्य समाज भवन की शिलान्यास करवाकर समाज ने एक सभा की जिसका प्रधान मुझे बनाया गया और हम दोनो का सम्मान शाल ओढ़ाकर किया गया। इसके उपलक्ष में मैंने अपने चारों भाइयों की ओर से एक कमरा एक लाख का बनवाने की कही और दीनदयाल जी ने अढ़ाई लाख रुपए दान के रूप में दिए। इससे पहले मुझे, दीनदयाल जी गुप्ता तथा स्व. अमीलालजी आर्य बहल वाले को यानि हम तीनों को एक घोड़ा बग्गी में बिठाकर पूरे गाँव में एक शोभायात्रा निकाली थी जिसका चित्र मेरे द्वारा लिखे ''खुशहाल लेखावली'' ग्रन्थ में प्रकाशित हैं।

4. सन् 2009 में गांधी धाम आर्य समाज सन् 2001 में आए भयंकर भू–कम्प के कारण 175 अनाथ हुए बच्चों का पालन पोषण व शिक्षा आदि दे रहे हैं। सभी बच्चे बड़े खुशहाल हैं। उनकी शाखा पाण्डुचेरी में चल रही हैं। उन्होने अपने वार्षिक उत्सव पर मुझे बुलाकर आर्य जगत् के एक अच्छे लेखक के रूप में एक शाल ओढ़ाकर तथा एक स्मृति चिह्न देकर मेरा अभिनन्दन किया। उस समय इस समाज के मंत्री वाचोनिधि आर्य थे।

5. 15, 16, 17 जनवरी 2010 में आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल ने एक महासम्मेलन महाजाति सदन में किया जिसमें मुझे बड़ाबाजार आर्यसमाज के एक अच्छे कार्यकर्ता के रूप में एक शाल ओढ़ाकर सम्मान किया। उसी समय आर्य समाज सिलीगुड़ी की तरफ से पूज्य चाचा रत्तिराम शर्मा और आर्य समाज हावड़ा की तरफ से स्व. पुष्कर लाल आर्य की धर्म पत्नी (मेरी पूज्या मौसीजी) का सम्मान हुआ।

6. 22 अगस्त 2010 में आर्य समाज बड़ाबाजार ने अपने वार्षिक उत्सव पर अपनी परम्परा के अनुसार अहिंसा प्रचार समिति भवन में मेरा तथा मेरी धर्मपत्नी विमला देवी आर्य का सम्मान दोनों को शाल ओढ़ाकर तथा मुझे एक प्रशस्ति–पत्र तथा नारियल देकर एक वयोवृद्ध सदस्य तथा एक अच्छे कार्यकर्ता के रूप में किया। इसमें समाज ने मुझे 15000/– (पन्द्रह हजार रुपए) सम्मान के रूप में दिए। मैंने उसमें से 5000/– (पाँच हजार) रुपए और मिला कर 21000/– (इक्कीस हजार) रुपए आर्य समाज बड़ाबाजार की एफ.डी. के लिए दान रूप में दे दिए।

7. आर्य समाज कलकत्ता ने अपनी 125वीं वर्षगाँठ पर 2 जनवरी 2011 को मनाई उसमें अन्य समाजों के अच्छे कार्यकर्ताओं के साथ मुझे भी आर्य समाज बड़ाबाजार के अच्छे कार्यकर्ता के रूप में स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। यह उत्सव धर्मतल्ला मैदान में हुआ था।

8. फरवरी 2011 में टंकारा में पूज्य रामनाथ जी सहगल ने महर्षि दयानन्द के जन्मोत्सव पर मेरा अभिनन्दन आदरणीय विजय मल्होत्रा नेता बी.जे.पी. के कर कमलों से शाल ओढ़ाकर करवाया। इसके पीछे कारण यह था कि मैं बहुत वर्षो से महर्षि दयानन्द के जन्मोत्सव पर 20–25 हजार रुपए हर साल टंकारा में रामनाथ जी सगहगल के पास भेजता रहा हूँ। यह स्वर्णजयन्ती थी इसलिए 40–45 हजार रुपए लेकर गया जिसके लिए सहगल जी ने प्रसन्न होकर मेरा अभिनन्दन करवाया।

9. ताः 29–9–2011 को सलखिया गुरुकुल (छतीसगढ़) ने अपने वार्षिक उत्सव पर आदरणीय अंशुवेद जी आर्य (प्रधान प्रतनिधि सभा छत्तीसगढ़) के कर कमलों से एक शाल ओढ़ाकर मेरा सम्मान करवाया।

10. गुरुकुल कोलघाट में ताः 18. 10.2012 को ''वेद प्रचारक'' की उपाधि देकर तथा ताः 4.2.2014 को सेवा गौरव उपाधि देकर गुरुकुल के आचार्य पूज्य ब्रह्मदत्त जी ने अपने कर कमलों से दोनों बार प्रशस्ति–पत्र देकर मेरा अभिनन्दन किया। जिनके चित्र मेरे ग्रंथ ''खुशहाल लेखावली'' में अंकित हैं।

11. 27 अगस्त 2016 को आर्य समाज हावड़ा ने अपने श्रावणी उपाक्रम के वेद सप्ताह के उत्सव पर एक शाल उढ़ाकर तथा एक प्रशस्ति पत्र देकर मेरा अभिनन्दन किया। समाज के अच्छे कार्यकर्ता के रूप में।

12. आचार्य वेदश्रमी जिसको मैंने दानदाताओं के सहयोग द्वारा कुछ अपने पास से देकर सात वर्षो तक कई गुरुकुलों, एटा, खानपुर, हरिद्वार आदि में पढ़ाकर व्याकरणाचार्य बनाया और वह किसी के विशेष सहयोग से एटलान्टा (अमेरिका) चला गया और वहां एक बडे आर्य समाज का पुरोहित बन गया। वह 10.6.2016 में अपने तीन बच्चों का मुण्डन संस्कार करवाने के लिए अपने गाँव रैमा जिला देवडिया (बिहार) आया था तब मुझे व आदणीय दीन दयाल जी गुप्त को बुलाया था। तब वहाँ मेरा सम्मान वेदश्रयी ने भरी सभा में यह कहकर किया कि मैं आज जो कुछ हूँ वह आदरणीय पिता तुल्य खुशहालचन्द्र आर्य के कारण हूँ और एक धोती जोड़ा तथा फूल माला पहनाकर किया।

13. गुरुकुल हरिपुर (उड़ीसा) से मैं 2012 से एक संरक्षक के रूप में जुड़ा हुआ हूँ और हल साल उनके वार्षिक उत्सव पर जाता हूँ। इस गुरुकुल से जोड़ने का श्रेय स्व. सत्यानारायण जी लाहोटी व आचार्य राहुल देव जी, जो आर्य समाज बड़ाबाजार के पुरोहित हैं, उनको जाता है। मैंने वहाँ पर अभी तक नौ कमरे साढ़े तेरह लाख के जिसमें एक कमरा एक लाख का मेरा है बाकी आठ कमरे दानदाताओं के हैं। एक हॉल पाँच लाख का दान दाता शान्ति स्वरूप चैरिटेबल ट्रस्ट का है। 8–9 लाख रुपए नगदी बच्चों के लिए, गौशाला के लिए तथा अलमारियों के लिए दिए हैं। इस प्रकार कुल 27–28 लाख रुपए गुरुकुल हरिपुर में लगा चुका हूँ। इसके उपरान्त उनके उत्सव पर जाते समय लाख–सवा लाख नगदी दानदाताओं तथा कुछ अपने मिलाकर ले जाता हूँ। वैसे तो वे हर साल मेरा साधारण रूप में सम्मान करते ही हैं, परंतु 11.01.2014 को विशेष रुप से ''लेखबीर'' की उपाधि से सम्मानित किया प्रशस्ति पत्र देकर जो मेरे लिए गौरव की बात है।

14. ता. 20.05.2015 को नैनोरा मे पूज्य आचार्य सोमदेव जी मुम्बई वालों ने अपने गाँव के आर्य समाज की पच्चीसवीं वर्षगाँठ सिल्वर जुबली के रूप में मनाई जिसमें मुझे बुलाकर मेरा सम्मान अपने सुपुत्र के कर कमलों द्वारा एक शाल तथा प्रशस्ति–पत्र देकर किया। मैंने भी 7100/– (सात हजार एक सौ) रुपए दान रूप में दिए।

15. आर्य समाज बड़ाबाजार ने 2010 में नारायण स्वामी सेवा समिति उदयपुर वाले का शिविर लगवाया था जिसमें अन्य कार्यकर्ताओं के साथ मैंने भी काफी सेवा की थी। इसके फलस्वरूप अन्य लोगों के साथ मेरा भी अभिनन्दन एक स्मृति चिह्न देकर किया।

16. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सभा दिल्ली आन्ध्र व तेंलगाना आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में एक बुद्धिजीवी एवं आर्य विद्वान महासम्मेलन 2,3,4 फरवरी 2017 में हुआ था जिसमें 4.2.2017 को अन्य आर्य जनों के साथ मेरा भी सम्मान एक स्मृति चिह्न तथा शॉल ओढ़ाकर किया था। इसमें पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी, पूज्य स्वामी आर्यवेश जी तथा विट्ठलरावजी उपस्थित थे।

17. डी.ए.वी. संस्था के प्रधान आदरणीय पूनम जी सूरी, दुर्गापुर डी.ए. वी. स्कूल के उत्सव पर आए थे। उन्होंने मुझे विशेष रूप से दुर्गापुर बुलाकर मेरा अभिनन्दन एक शाल ओढाकर तथा साथ में 11000/– (ग्यारह हजार) का लिफाफा देकर किया। यह अभिनन्दन मेरे लिए विशेष महत्व इसलिए रखता है कि मेरे लेख व कविताएं डी.ए.वी. संस्था की पत्रिका 'आर्य जगत्' में बराबर प्रकाशित होते हैं। इसीलिए पूनम जी सूरी ने मेरा अभिनन्दन किया और अपने व्याख्यान मे यह भी कहा कि आज हमें ''खुशहाल चन्द्र'' आर्य जैसे लेखकों की आवश्यकता है। यह सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

18. ता. 9.7.2017 रविवार को आर्य समाज रोहिणी दिल्ली–85 में वहाँ के सभी अधिकारियों ने मिलकर तथा पूज्य सुखदेव जी तपस्वी भी साथ में थे। सभी ने मिलकर एक पीले रंग का दुपट्टा तथा फूलमाला पहनाकर मेरा सम्मान एक अच्छे लेखक व कवि के रूप में किया। इस समाज का मन्त्री मेरे साले का लड़का टोनी आर्य है। उसी के साथ मैं दिल्ली गया तब रोहिणी आर्य समाज में भी गया था।

19. ठाकुर विक्रम सिंह दिल्ली वाले ताः 17.9.2017 को अपनी 75वीं वर्षगांठ मनाई थी तब आर्य समाज के प्रसिद्ध 75 आर्यजन जिसमें विद्वान, उपदेशक, पुरोहित तथा लेखक व कवि आदि थे। सभी को सम्मनित किया था, उसमें मुझे भी एक अच्छे लेखक व कवि के रूप में एक शाल

तथा 11000 (ग्यारह हजार) रुपए का चैक देकर किया था। समाचार समय पर घर न पहुँचने के कारण मैं दिल्ली नहीं जा सका। आदरणीय राहुल देव (पुरोहित आर्यसमाज बड़ाबाजार, कलकत्ता) के हाथों मेरा उपहार भिजवा दिया था।

20. ताः 28.10.2017 को गुरुकुल कोलघाट ने अपने वार्षिक उत्सव पर मेरा पुनः सम्मान किया जिसमें एक पीले रंग का दुपट्टा ओढ़ाकर तथा मोतियों की माला पहनाकर पूज्य आचार्य ब्रह्मदत्त ने किया। इस समय पूर्वी बंगाल के अधिकतर उपदेशक उपस्थित थे।

21 सरदार पटेल मेमोरियल कमेटी जिसका मैं प्रधान भी हूँ, इस संस्था के मंत्री आदरणीय हीराजी भाई ने ताः 9.12. 2017 को अपनी चुनाव सभा में मुझें प्रधान बनाकर एक शाल ओढ़ाकर मेरा सम्मान किया।

22. गुरुकुल आर्यसेना ने अपनी स्वर्ण जंयती के शुभअवसर पर जो 23,24,25 दिसम्बर 2017 को मनाई गई थी। इसमें एक स्मृति चिह्न देकर 25.12.2017 को मेरा सम्मान किया।

23. गुरुकुल हरिपुर के वार्षिक उत्सव पर जो 27,28,29 जनवरी 2018 को मनाया गया था। उसमें ओप्रकाश हंस दिल्ली वाले ने एक सूती केशरियां रंग का कम्बल ओढ़ाकर, सुरेश बुग दिल्ली वाले ने बिना कढ़ाई का एक बढिया शाल ओढ़ाकर तथा गुरुकुल हरिपुर वाले ने भी एक पीले रंग का सूती कम्बल ओढ़ाकर ताः 29.01.2018 को मेरा अभिनंन्दन किया। इन लोगों ने पहले गुरुकुल में आए संत, सन्यासी व आचार्यो का सम्मान किया। फिर तीनों ने मेरा सम्मान किया।

24. अगस्त 2018 में कुछ गोभक्त गोशाला (हरियाणा) गए थे। मैं भी साथ गया था वहाँ पर गाँव के कई चौधरी सफेद साफा बाँध कर आए थे। उन्होंने तीन गो भक्तों का सम्मान 11.08.2019 को सफेद साफा ओढ़ा कर किया जिनमें मैं भी एक था वह साफा मैंने कलकत्ता आकर पूज्य आचार्य ब्रह्मदत्त जी को दे दिया।

25. दिनांक 25.03.2018 को आचार्य वेद प्रकाश जी ने गुरुकुल मालिग्राम में एक उत्सव किया, जिसमें कलकत्ता के कुछ आर्यजन गए थें जिनमें मैं भी एक था। वहाँ आचार्य वेद प्रकाश जी ने मुझे गुरुकुल का प्रधान बनाकर कुछ एक प्रशस्ति पत्र देकर मेरा सम्मान किया। मैंने भी 11000 (ग्यारह हजार) रुपया अपनी ओर से और 5100 (इक्यावन सौ) रुपये पूज्य चाचा रतिराम शर्मा सिलीगुड़ी वाले के देकर गुरुकुल का सहयोग किया। आर्य समाज कलकत्ता के मंत्री आदरणीय दीपकजी आर्य तथा उसी समाज के सदस्य आदरणीय सुरेश अग्रवाल ने भी फूलमाला पहनाकर मेरा स्वागत किया।

26. दिनांक 27.28.29 दिसम्बर 2018 को आर्य समाज कलकत्ता ने अपना वार्षिक उत्सव ऋषिकेश पार्क में खूब धूमधाम से मनाया और उसमें ता. 29.12.2018 को मेरा अभिवादन एक प्रशस्ति–पत्र देकर तथा एक शाल ओढ़ाकर किया। समाज ने मुझे प्रशस्ति पत्र तथा 11000 (ग्यारह हजार) का लिफाफा दियां मैंने उसमें 5000 (पाँच हजार) बढ़ाकर सोलह हजार करके समाज को दान के स्वरूप दे दिया, जिससे आर्य समाज कलकत्ता से सभी अधिकारी जैसे प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष आदि बड़े प्रसन्न हुए। इस प्रकार 26 संस्थाओं व गुरुकुलों से मेरा सम्मान या अभिनंदन हो चुका है। जिसका पूरा विवरण मेरे द्वारा लिखित "खुशहाल लेखावली" में सभी स्मृति चिह्न तथा प्रशस्ति पत्र चित्रों सहित प्रकाशित हो चुके हैं। आप कृपया उस ग्रंथ का पढ़ने का कष्ट करें।

अब मेरा दूसरा महापर्व दिनाँक 30. 12.2018 को यानि आर्य समाज कलकत्ता द्वारा मेरा जो अभिनंदन हुआ उसके दूसरे दिन यह दूसरा महापर्व हुआ। अभिनंदन के उपलक्ष में मेरे परिवार वाले कलकत्ता आए हुए थे। उन्होंने सभी से मिलकर यह विचार किया कि पिताजी का जन्म 10.10.1933 को है। इसलिए 10.10.2018 को उनकी अम्र 85 वर्ष की हो जाती है इसलिए कल दिनाँक 30.12.2018 को उनकी 85वीं वर्षगाँठ मना लेनी चाहिए और उन्होंने सभी परिचित व रिश्तेदारों और मुख्य–मुख्य जिनसे विशेष प्रेम था उन सबको कलकत्ता में थे फोन कर दिया और 30.12.2018 सोमवार को खूब धूम–धाम से मेरी 85 वर्षगाँठ मनाई गई। प्रथम में प्रातः दस बजे आचार्य योगेश जी व आचार्य वेदभानुजी घर पर आ गए और उन्होंने खूब विधिपूर्वक सम्मिलित रूप से यज्ञ करवाया। मैं और मेरी धर्मपत्नी विमला देवी आर्य मजमान बने। यज्ञ बारह बजे तक चला तब तक अभी आने वाले आ गये ग्यारह बजे सब आगंतुकों को नाश्ता करवास दिया और फिर बारह बजे बाद भोजन करवाना आरंभ कर दिया। ईश्वर की अपार कृपा से भोजन बहुत ही स्वादिष्ट बना और 156 लोगों ने भोजन किया। मेरे सम्बंधी साहजी सीताराम गर्ग व दिनेश गगे ने तथा मेरे साथ प्रातः काल घूमने वाले 5–6 साथियों ने मुझे शाल ओढ़ाकर मेरा सम्मान किया। पूरा कार्यक्रम बहुत ही अच्छा रहा और सब लोग कार्यक्रम की खूब प्रशंसा करते हुए अपने–अपने घर चले गए। आने वाले सभी का`जाते समय एक–एक चाँदी का सिक्का मेरे बच्चों ने जिसमें चिं. दिनेश आर्य व राजेश आर्य मुख्य थे, सभी आने वालों को दिया। समारोह में काफी गुलदस्ते, शाल व नगदी रुपए आए। इस प्रकार ईश्वर की असीम कृपा से मेरे दोनो महापर्व खूब आनंद व उल्लास के साथ सम्पन्न हुएं अब भी कभी याद आते हैं तो बड़ी प्रसन्नता होती है।

180 दोतल्ला महात्मा गांधी रोड
कोलकत्ता–700007

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का हठयोग–परीक्षण

● (स्मृतिशेष) डॉ. भवानीलाल भारतीय

उत्तराखण्ड के पार्वत्य प्रदेश से नीचे उतर कर मार्गशीर्ष 1912 वि. में दयानन्द रामपुर होते हुए काशीपुर आये। वहाँ से चल कर द्रोणसागर में उन्होंने शीतकाल व्यतीत किया। शीत ;तु के समाप्त होने पर वे द्रोणसागर से मुरादाबाद तथा सम्भल होते हुए फाल्गुन 1912 वि. में गढ़मुक्तेश्वर पहुंचे। इस प्रकार वे गंगा की तटवर्ती भूमि पर विचरण करते रहे। आत्मकथन से विदित होता है कि इस समय उनके पास शिवसंध्या, हठयोग–प्रदीपिका तथा योग बीज आदि हठयोग के कतिपय ग्रन्थ थे। दयानन्द ने इन्हीं ग्रन्थों का पुनः पुनरू पारायण और विचार किया। हठयोग की साधना पातंजल योग की पद्धति से मूलतः भिन्न है। जहां महर्षि पतंजलि द्वारा उपदिष्ट राजयोग में यम नियमादि योग के आठ अंगों के परिपालन पर जोर दिया गया है, वहाँ हठयोग में कुछ शारीरिक तथा मानसिक रहस्यपूर्ण क्रियाओं तथा जटिल साधनाओं का प्रतिपादन ही मिलता है। हठयोग के अनुसार मानव शरीर में इड़ा, पिंगला एवं सुषुम्णा नाड़ियों के अतिरिक्त अष्ट चक्रों की अवस्थिति है। दयानन्द के हृदय में हठयोग के प्रतिपाद्य विषयों की यथार्थ जानकारी प्राप्त करने की इच्छा उत्तरोत्तर बलवती हो रही थी। एक दिन अनायास ही ऐसा संयोग उत्पन्न हुआ, जिसका लाभ उठा कर उन्होंने हठयोग के विधायक ग्रन्थों में वर्णित शरीर स्थित नाड़ी चक्रों की वास्तविकता का परिज्ञान करना चाहा। इस घटना का उल्लेख स्वामीजी ने अपने आत्मकथन में इस प्रकार किया है –

'एक दिन दैव संयोग से एक शव मुझे नदी में बहता हुआ मिला। तब सचमुच मुझे अवसर प्राप्त हुआ कि मैं उसकी परीक्षा करता।... मैं नदी के भीतर गया और शव को पकड़ तट पर लाया। मैंने तीक्ष्ण चाकू से उसे यथायोग्य काटना प्रारम्भ किया और हृदय को उसमें से निकाल लिया और ध्यानपूर्वक देख परीक्षा की। अब पुस्तकोल्लिखित वर्णन की उससे तुलना करने लगा।... यह निश्चय करके कि दोनों अर्थात् पुस्तक और शव लेशमात्र भी परस्पर नहीं मिलते मैंने पुस्तकों को फाड़ कर उनके टुकड़े टुकड़े कर डाले और शव को फेंक, साथ ही पुस्तकों के टुकड़ों को भी फेंक दिया।'

सत्य के प्रति निर्मम आग्रह और दृढ़ जिज्ञासा का भाव रखने वाला व्यक्ति ही ऐसा कर सकता है। सत्य को जानने और उसे स्वीकार करने के लिये दयानन्द की आत्मा में कितना उत्साह और कितनी ललक थी, यह उनके जीवन में घटित कतिपय बातों से स्पष्ट हो जाती है। शिवरात्रि की घटना का वर्णन हम कर चुके हैं। ज्यों ही मूलशंकर को यह विदित हुआ कि प्रस्तर प्रतिमा वास्तविक शिव नहीं है, उसी समय संस्कारों से उपार्जित मूर्तिपूजा के प्रति उनका आस्थाभाव अविलम्ब समाप्त हो गया और फिर शैव पिता के द्वारा प्रस्तुत किये गये कितने ही समाधानात्मक वाक्य और प्रतीकोपासना की आपातरमणीय व्याख्याएं उसे संतुष्ट नहीं कर सकीं। इसी प्रकार मानवशरीर की चीर फाड़ जैसे जुगुप्साजनक कार्य को भी उन्होंने सत्य को जानने की दृष्टि से ही किया। इस बार भी जब उन्हें विदित हो गया कि हठयोग की जो धारणाएं मानवशरीर में पाये जाने वाले तथाकथित नाड़ी चक्रों आदि पर आधारित है, उन चक्रों आदि का भी कोई अस्तित्व नहीं है तो उन्हें इस योगपद्धति की निस्सारता का पूर्ण रूप से विश्वास हो गया। अब उन्होंने यही उचित समझा कि परीक्षित शव के साथ ही हठयोग के इन ग्रन्थों को भी जल समाधि दे देना चाहिए। क्या ये घटनाएं इस बात को सिद्ध नहीं करतीं कि दयानन्द सत्य के वास्तविक रूप का ही साक्षात्कार करना चाहते थे। धर्म और अध्यात्म की यथार्थ साधनापद्धतियां किस प्रकार जटिल, रहस्यपूर्ण, बीभत्स एवं स्थूल रूप धारण कर चुकी हैं, इस तथ्य से परिचित होने के साथ ही उन्होंने इन निरर्थक साधना पद्धतियों को त्यागने में भी कोई संकोच नहीं किया। सत्य के प्रति दृढ़ आस्था का यह भाव ही दयानन्द की जीवनयात्रा का निर्देशक तत्त्व बना था। इस प्रकार हठयोग की पद्धति और ग्रन्थ राशि के प्रति जब उनकी विरक्ति हुई, तो उनका यह विश्वास और भी दृढ़ हो गया कि वास्तविक योगसाधना के लिये वेद, उपनिषद् तथा सांख्य, योग आदि दर्शनों में प्रतिपादित विचारसरणि का ही अवलम्बन किया जाना चाहिए।

स्रोत : नवजागरण के पुरोधा
दयानन्द सरस्वती,
प्रथम संस्करण, पृ.35–36
प्रस्तुति : भावेश मेरजा

पत्र/कविता

रावी को सीमा रेखा मानने का प्रस्ताव वैदिकधर्मी भाई परमानन्द ने दिया था

पाकिस्तान बनाने की मांग 1940 में की गई थी जिस पर 1947 में कांग्रेस ने सहमति दे दी। मौ. जिन्ना के, लंदन में, जूनियर रहे वकील, सर सिरिल रैडक्लिफ को, प्रस्तावित पाकिस्तान की सीमा रेखा निश्चित करने का कार्यभार सौंपा गया। उनके नाम पर कांग्रेस ने कोई आपत्ति नहीं की जबकि वे जिन्ना को लाभ पहुँचा सकते थे और उन्होंने जिन्ना का ख्याल रखा।

कराची में हिन्दू 51 प्रतिशत थे अतः वो भारत को मिलना चाहिए था जबकि जिन्ना उसे राजधानी बनाना चाहते थे। रैडक्लिफ को यह कहना चाहिए था कि यदि कराची लेनी है तो लाहौर भारत का दिया जाएगा। लेकिन उन्होंने चालाकी से जिन्ना का पक्ष लेते हुए नेहरू से कह दिया कि कोलकाता ले लो या लाहौर ले लो। अदूरदर्शी नेहरू ने तुरन्त कह दिया कि कोलकाता ले लेंगे। इस प्रकार नेहरू की लापरवाही से पाकिस्तान को कराची और लाहौर दोनों मिल गए। नेहरू को कहना चाहिए था कि कोलकाता और लाहौर की तुलना नहीं की जा सकती है।

इंग्लैंड के प्रधान मंत्री ने मौखिक संदेश में आयोग से कहा था कि लाहौर भारत को दिया जाए। रावी नदी को सीमा रेखा मान लिया जाता तो लाहौर भारत को मिलता। रावी नदी को सीमा रेखा मानने का सुझाव वैदिक धर्मी–हिन्दू महासभाई नेता भाई परमानन्द ने दिया था। नेहरू को खंडित भारत का प्रधान मंत्री बनने की जल्दी थी अतः उन्होंने कोई प्रयास नहीं करते हुए कह दिया कि आयोग जो निर्णय देगा भारत उसे स्वीकार करेगा। नेहरू तो मौज मस्ती करते रहे और आयोग ने पाकिस्तान को अधिक क्षेत्र देकर जिन्ना को खुश कर दिया।

इन्द्र देव गुलाटी
नगर आर्य समाज
18/186ए टीचर्स कॉलोनी
बुलन्दशहर

उस रंग में रंग दे जिसमें तूने महात्मा हंसराज को बनाया था

परम पिता परमात्मा जब इन्सान बनाने बैठा,
तो सोचने लगा कि इन्सान किस रंग में बनाऊँ?
अगर गोरा बना दिया, तो वो समस्त दुनिया पर अपना राज्य जमायेगा,
अगर काला बना दिया, तो वह आज़ादी के लिए तरसता रहेगा,
अगर पीला बना दिया, ज़िन्दगी भर डर में रहेगा,
अगर लाल बना दिया, तो सब पर क्रोध करता रहेगा,
अगर नीला बना दिया, तो ग़म में उदास रहेगा,
अगर हरा बना दिया, तो दूसरों को देख जलता रहेगा।
भगवन! तूने जो भी किया, अच्छा किया।
मेरी एक प्रार्थना है,
मुझे उस रंग में रंग दे,
जिस रंग में तूने महात्मा हंसराज को बनाया था।
जिसमें सेवा का भाव हो, जिस में त्याग की भावना हो।
जिसमें इंसानियत और नैतिकता भरपूर भरी हो।
जिसमें दूसरों के दुख का दर्द महसूस हो। जिस में प्यार ही प्यार हो।
जिसमें हर वस्तु में तू ही तू नजर आये।
प्रभु ऐसे रंग में मुझे रंग दो।
रंगों का त्योहार मुबारक हो!

पूनम सूरी, प्रधान
डी. ए. वी. प्रबन्धकर्त्री समिति

दोहे

उलझन में उलझे नहीं, शान्त तब रह पाए।
जाल बुने जो और को, फसे उलझ वह जाए।

बन्दर बोता बीज तो, चाहे फल को खाए।
खोद खोद कर देखता, पेड़ नहीं उग पाए।।

जो भी मुझ पर हंस रहा, खुखी मुझे दे जाए।
कारण हसी का मैं बना, यह सुकून दे पाए।।

कल आज कल चलता रहा, समय नहीं रुक पाए।
काल करे सोआज कर, समय निकलता जाए।।

जग भर को तो जानता, पर खुद से अनजान।
बाहर बाहर घूमता, भीतर खुद को जान।।

जितना खुद को जान ले, उतना सुख ले पाए।
खुद को ही न जानता, दुखी तभी हो जाए।।

आशा जो भी करे, प्रभु से ही लगाए।
औरों से आशा करे, निराश तभी हो जाए।।

कोशिश भरसक जो करे, सफल तभी हो पाए।
चिंता फल की ना करे, छोड प्रभु पर पाए।।

खुशी–खुशी से गर करे, काम सरल हो जाए।
रुचि नहीं अगर काम में, काम कठिन बन जाए।।

जीवन भव सागर फसा, जाता कैसे पार।
ईश्वर नौका जो चढ़ वही उतरता पार।।

नरेन्द्र आहुजा 'विवेक'
502–जी.एच. 27, सैक्टर–20
पंचकूला हरियाणा

कोरोनाः चीन से सबक लें

कोरोना वायरस का मुकाबला करने में भारत का स्वास्थ्य मंत्रालय और दिल्ली सरकार ने जो मुस्तैदी दिखाई है, वह काबिले–तारीफ है। हजारों लोगों की जांच हवाई अड्डों और अन्य स्थानों पर हो रही है। यदि चीन से निकली यह बीमारी अमेरिका–जैसे हजारों मील दूर स्थित देश तक फैल सकती है तो चीन तो हमारा एक दम पड़ौसी देश है। यदि केंद्रीय स्वाथ्य मंत्री और दिल्ली के मुख्यमंत्री ने तत्काल मुस्तैदी नहीं दिखाई होती तो अब तक चीन की तरह हजारों लोग भारत में भी काल के गाल में समा जाते।

सरकार द्वारा टीवी चैनलों और अखबारों के जरिए जो चेतावनियां जारी की जा रही हैं, उन पर लोग बराबर ध्यान दे रहे हैं और फिर गर्मियों का मौसम शुरु हो रहा है, इसीलिए देश के लोगों को बदहवास होने की जरुरत नहीं है। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने इस बार होली के उत्सव से बचने की घोषणा की थी और कई अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन भी स्थगित गए।

हमें यह सोचना चाहिए कि 70–80 देशों में फैला यह वायरस चीन में ही क्यों उत्पन्न हुआ ? यदि इसका ठीक–ठीक पता चल सके तो भारत और दुनिया के अन्य देश भी इससे बच सकेंगे। अभी कुछ सामरिक विशेषज्ञों का यह मत प्रकट हुआ है कि चीन के वैज्ञानिकों ने इस वायरस को खुद पैदा किया है ताकि चीन के दुश्मन राष्ट्रों के विरुद्ध एक हथियार के रुप में इसका प्रयोग कर सकें।

कुछ दिन पहले इसके दूसरे कारण के तौर पर चीनियों की मांसाहारी प्रवृत्ति को बताया गया था। वे किसी भी पशु या पक्षी के मांस से परहेज नहीं करते। चमगादड़ का मांस कोरोना का खास कारण माना गया है। इसका तीसरा कारण चीन के औद्योगीकरण में साफ–सफाई के प्रति लापरवाही को भी माना गया है।

कारण जो भी हो, इस बीमारी के कारण चीनी अर्थ–व्यवस्था पैंदे में बैठ गई है। उसका असर संपूर्ण विश्व–अर्थव्यवस्था पर भी हो रहा है। चीन के साथ भारत का व्यापार सबसे ज्यादा है। वह ठप्प होने के कगार पर है। भारत चीन का पड़ौसी है और कई दृष्टियों से चीन–जैसा ही है। यह बिल्कुल सही मौका है, जबकि भारत को चीन से सबक लेना चाहिए।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक
www.drvaidik.in

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, वेलचेरी, चेन्नई में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की जयंती

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, चेन्नई के प्रांगण में कक्षा पहली और दूसरी के विद्यार्थियों और शिक्षकों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस हर्षोल्लास से मनाया। कार्यक्रम का आरंभ डी. ए. वी. गान और गायत्री मंत्रोच्चारण से हुआ। कक्षा दूसरी के छात्रों ने सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जीवन परिचय बताया और आर्य समाज की विचारधारा पर अपने विचार प्रस्तुत किए। तत्पश्चात विद्यार्थियों ने आर्य समाज के दस नियमों की व्याख्या और स्वामी जी के प्रेरणात्मक नारों को बताया। कक्षा पहली के छात्रों ने 'सहमावतु ....' मंत्र पर नृत्य द्वारा शांति के लिए योगासन प्रदर्शित किए।

कक्षा दूसरी के छात्रों ने एक नृत्य नाटिका की भी प्रस्तुति की, जिसमें स्वामी जी के जीवन चरित्र का प्रदर्शन किया गया। दर्शकों ने इस रंगारंग कार्यक्रम की खूब सराहना की। इस अवसर पर फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें नन्हे – नन्हें छात्र दयानन्द सरस्वती जी और उनके विचारों से प्रभावित अन्य महापुरुषों की वेशभूषा में आए और अपने विचार प्रस्तुत किए। छोटे बच्चों द्वारा ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रों का सस्वर पाठ सराहनीय था। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगीत और शांति पाठ से हुआ।

मानवती आर्य कन्या विद्यालय हाँसी में पारितोषिक वितरण समारोह सम्पन्न

मानवती आर्य कन्या उच्च विद्यालय, हाँसी में वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री विनोद भयाणा (विधायक) ने दीप प्रज्ज्वलित करके करके समारोह का शुभारम्भ किया।

विद्यालय के प्रधान श्री वेद प्रकाश नारंग ने आए हुए सभी अतिथियों का परिचय देते हुए स्वागत किया व दानी सज्जनों का अभिनन्दन किया। इस समारोह पर विद्यालय के छात्र–छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। जिनमें लघु नाटिका 'एक कदम स्वच्छता की ओर' तथा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' आकर्षण का केन्द्र रहे।

मुख्य अतिथि श्री विनोद भयाणा ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए संदेश दिया कि पढ़ते रहिए, आगे बढ़ते रहिए। उन्होंने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। उन्होंने समारोह के सफल आयोजन का श्रेय प्रधानाचार्या को दिया और उनके प्रयासों की सराहना करते हुए विद्यालय परिवार को बधाई दी। विद्यालय की मुख्याध्यापिका श्रीमती डॉ. तमन्ना जी ने सत्र 2018–19 की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री रमेश कुमार गुप्ता व विशिष्ट अतिथि श्री सत्यपाल आर्य रहे।

आर्य समाज रावतभाटा ने कैंसर जागरुकता का दिया संदेश

आर्य समाज रावतभाटा के तत्वावधान में नगर के प्रमुख बाजार में कैंसर जागरूकता का जन सम्पर्क अभियान रखा गया। राजस्थान प्रतिनिधि सभा के प्रचार मंत्री अर्जुनदेव चड्ढा, एडवोकेट कुशवाह, पूर्व प्रधानाचार्य सूरजप्रकाश गुप्ता, किशन आर्य, प्रमोद गुप्ता तथा स्थानीय आर्य समाज की महिला सदस्यों ने भाग लिया।

कैंसर सोसायटी के अध्यक्ष डॉ.

गुप्ता ने कहा कि बीड़ी, जर्दा, गुटखा, पान मसाला, अल्कोहल का प्रयोग कैंसर को जन्म देता है। उन्होंने कहा कि 1 मार्च को कोटा में कैंसर अस्पताल का शुभारंभ हो जाएगा। वहीं 8 मार्च को कोटा कैंसर सोसायटी की ओर से कैंसर जांच एवं निदान शिविर लगाया जाएगा जिसमें मुम्बई के कैंसर विशेषज्ञ डॉ. राजेश मिस्त्री तथा डॉ. हर्षवर्द्धन सेवाएं देंगे।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

आचार्य देवव्रत, राज्यपाल ...

का स्मारक ऐसा बनना चाहिये जिससे भावी पीढ़ियां प्रेरणा ले सकें। ऋषि जन्मभूमि में ऋषिभक्तों और पर्यटकों के लिये आधुनिक व्यवस्थायें एवं सुविधायें होनी चाहियें।

आचार्य देवव्रत जी ने डी.ए.वी. स्कूल एवं कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के यशस्वी, प्रधान श्री पूनम सूरी जी की ऋषि–भक्ति एवं भावनाओं की प्रशंसा की और बताया कि श्री पूनम सूरी जी ने मुझे कहा है कि टंकारा व राजकोट के मध्य एक डी.ए.वी. स्कूल व कालेज खोलेंगे। उस स्कूल की समस्त आय ऋषि जन्मभूमि न्यास, टंकारा को प्राप्त होगी। आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि प्रस्तावित डी. ए.वी. स्कूल व कालेज के लिए स्थान व अन्य सुविधायें गुजरात सरकार प्रदान करेगी।

आचार्य जी ने टंकारा न्यास को अपनी ओर से 11 लाख रुपयों की धनराशि दान दी। इससे पूर्व भी आचार्य जी ने एक प्रचार वाहन के लिये 11 लाख रुपये दान किये थे। आचार्य जी के व्याख्यान के बाद राष्ट्रगान हुआ। इसी के साथ यह आयोजन व सभा समाप्त हुई।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

डी ए वी, जयपुर ...

इसी क्रम में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, राजस्थान की ओर से प्राचार्य अशोक कुमार शर्मा, श्री एम पी सिंह जी, श्री नवनीत ठाकुर, श्री राजेन्द्र प्रसाद एवं श्रीमती नरिन्दर कौर ने माननीय प्रधान जी को प्रशस्ति–पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

आचार्य दीपक शास्त्री, श्रीमती श्रुति शास्त्री एवं विद्यालय के संगीत शिक्षक श्री राधावल्लभ जी ने भजनों की प्रस्तुतियाँ दी। इस कार्यशाला में स्थानीय विद्यालय के साथ ही अजमेर स्थित डी ए वी शताब्दी, डी.बी. एन. व डी.ए.वी. बहरोड़ के प्राचार्यगण अपने शिक्षक–शिक्षिकाओं के साथ उपस्थित रहे। साथ ही स्थानीय आर्य समाजों के प्रबुद्ध प्रतिनिधियों ने भी कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया। अन्त में शान्ति पाठ व अल्पाहार के साथ कार्यक्रम समापन हुआ।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 18/19-03-2020

जे.सी. डी.ए.वी. कॉलेज दसूहा में ऋषि बोध दिवस के उपलक्ष्य में यज्ञ

जे.सी. डी.ए.वी. कॉलेज, दसूहा के प्रागंण में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के 'ऋषि बोध' को समर्पित यज्ञ आर्य समाज की रीतियों तथा परम्पराओं के अनुसार किया गया। इस समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री अशोक नंदा थे।

प्रिसींपल डॉ. अमरदीप गुप्ता ने यज्ञ के पश्चात् अपने सम्बोधन में स्वामी दयानन्द जी के जीवन दर्शन तथा ऋषि बोध की प्रासंगिकता व विस्तारपूर्वक चर्चा की। प्रिसींपल डॉ. गुप्ता ने कहा कि ईश्वर से हमारी प्रार्थना है कि यह कॉलेज शैक्षणिक, सांस्कृतिक तथा खेलकूद सभी आयामों में

उन्नति के पथ पर सदैव की भान्ति अग्रसर रहे।

श्री अशोक नंदा जी ने कॉलेज के हर क्षेत्र में उन्नतिशील होने पर प्रकाश डाला। वाईस प्रिसींपल डॉ. गुरमीत सिंह जी ने मुख्यातिथि श्री अशोक नंदा तथा यज्ञ से सम्मिलित गणमान्य व्यक्तियों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर विशेष रूप से प्रिसींपल सतीश शर्मा तथा स्कूल का समूह स्टाफ, मास्टर रमेश, श्री योगेश वर्मा, श्री मदनलाल, श्री सतीश कालिया, प्रो. एम.एस. राणा तथा प्रो. एच.सी शर्मा, प्रो. निवेदिका, प्रो. आर के महाजन, प्रो. अमनदीप राणा, प्रो. मोहित, प्रो. सुमन तथा प्रो. अंजना उपस्थित थे।

हंसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर में वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

हंसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर में वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। माननीय लैफ्टिनैंट गर्वनर, पुडुचेरी, डॉ. किरण बेदी मुख्यातिथि स्वरूप उपस्थित हुई। मुख्यातिथि ने अपने संभाषण में संस्था में आने पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते कहा कि जीवन चुनौतीपूर्ण है आप तभी सुशिक्षित है जब आप जीवन की चुनौतियों को पार करने में सशक्त हैं। उन्होंने लड़की को अपना निर्णायक बनने, दहेज प्रथा के विरुद्ध खड़े होने, अपना अस्तित्व कायम रखने हेतु शिक्षित किया तथा जीवन की दौड़ में दौड़ने हेतु सदैव हिम्मत को धारण करने के लिए प्रेरित किया एवं छात्राओं को अपने भविष्य के प्रति जागृत होने एवं सदैव सशक्त, हिम्मती बनने हेतु प्रेरित किया।

समागम का शुभारंभ ज्योति प्रज्ज्वलित

कर राष्ट्रीय गान तथा डी.ए.वी. गान से किया गया। प्राचार्या प्रो. डॉ. (श्रीमती) अजय सरीन ने मुख्यातिथि एवं अन्य गणमान्य सदस्यों का अभिनंदन किया।

प्राचार्य ने संस्था की उलब्धियों संबंधी संक्षिप्त, वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। प्राचार्या जी ने अपने स्लोगन बेटी बचाओ, पढ़ाओ, बेटा समझाओ के साथ–साथ बुजुर्गों को अपनाओ का नारा बुलन्द करते हुए कहा कि यदि आज का युवा वर्ग इस स्लोगन को आत्मसात कर ले तो समाज में किसी भी वृद्धाश्रम की आवश्यकता नहीं रहेगी।

उन्होंने बताया कि संस्था हंसराज महिला महाविद्यालय निरन्तर नवीन आयाम स्थापित कर रहा है। जस्टिस एन.के. सूद जी ने अपने शुभाशीष में कहा कि आज का दिन गौरवमय है जब हमारी छात्राएँ अपने परिश्रम का फल प्राप्त कर रही हैं। उन्होंने कहा कि छात्रायें मुख्यातिथि लैफ्टिनैंट गर्वनर पुडुचेरी डॉ. किरण बेदी के किरण जैसी बनने का संकल्प लें। एच.एम.वी. ई. साथी ऐप का श्री जगजीत भाटिया के संरक्षण में विमोचन किया गया जिस पर छात्राएँ अपनी किसी भी प्रकार की समस्या व्यक्त कर सकती हैं।

मुख्यातिथि प्राचार्य एवं गणमान्य अतिथियों ने 62 छात्राओं को स्वर्ण पदक, 32 छात्राओं को रजत पदक एवं 13 छात्राओं को कांस्य पदक देकर सम्मानित किया।

डी.ए.वी. फिरोजपुर कैंट में हुआ पंचकुंडीय यज्ञ

डी.बी.डी.ए.वी. सेंटेनरी पब्लिक स्कूल फिरोजपुर कैंट में विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना के लिए पंचकुंडीय यज्ञ का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विद्यालय के उपाध्यक्ष श्री सतीश शर्मा एव मैडम सुदेश शर्मा मुख्यातिथि स्वरूप पधारे अन्य अतिथि श्री मनोज आर्य तथा डॉ. सतनाम कौर भी उपस्तिथ हुए। इस यज्ञ में विद्यालय के सभी अध्यापक–अध्यापिकाओं व छात्र–छात्राओं ने हिस्सा लिया तथा वैदिक मंत्रोच्चारण सहित यज्ञ में आहुति डालकर सभी ने

विद्यालय व विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

यज्ञ के पश्चात् विद्यालय के प्राचार्य श्री भूपेंद्र शर्मा ने अतिथियों का अभिनन्दन करते हुए कहा कि यज्ञ करना मात्र एक बाहरी क्रिया नहीं अपितु पूर्णत वैज्ञानिक क्रिया है। यह यज्ञ हमारी आत्मा को शुद्ध करके हमें ऊँचा उठाने में मददगार होता है। उल्लेखनीय है कि विद्यालय में यज्ञ की परम्परा इसके स्थापना दिवस से चल रही है इस अवसर पर प्राचार्य जी ने विद्यार्थियों के भविष्य की मंगल कामना की।

मुख्यातिथि श्री सतीश शर्मा जी ने आशीवर्चन देते हुए विद्यालय की प्रगति पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की तथा विद्यार्थियों को वार्षिक परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएँ दीं। अंत में प्राचार्य श्री भूपेंद्र शर्मा ने सभी अतिथिगणों का आभार व्यक्त किया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**